चन्दामामा

मार्च १९७३

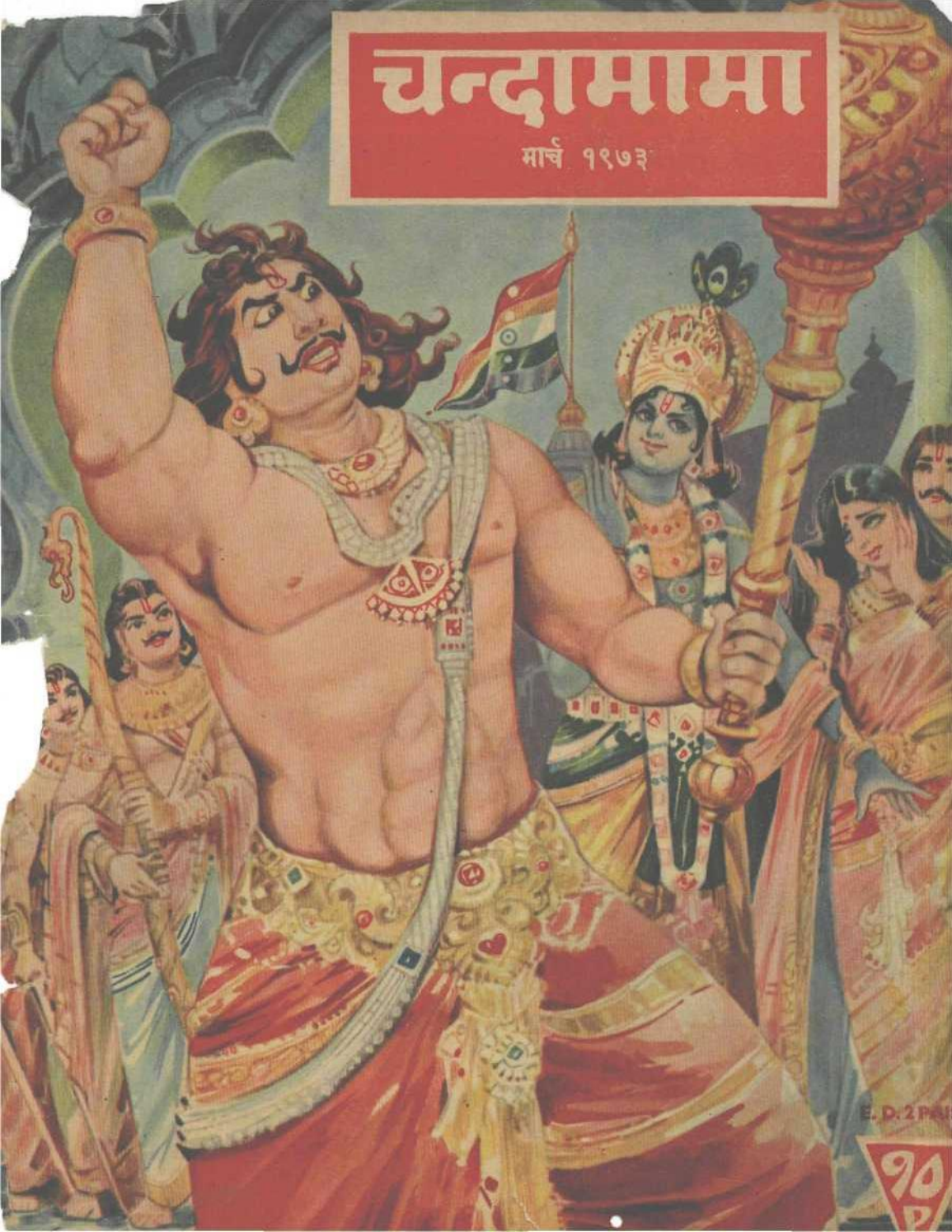

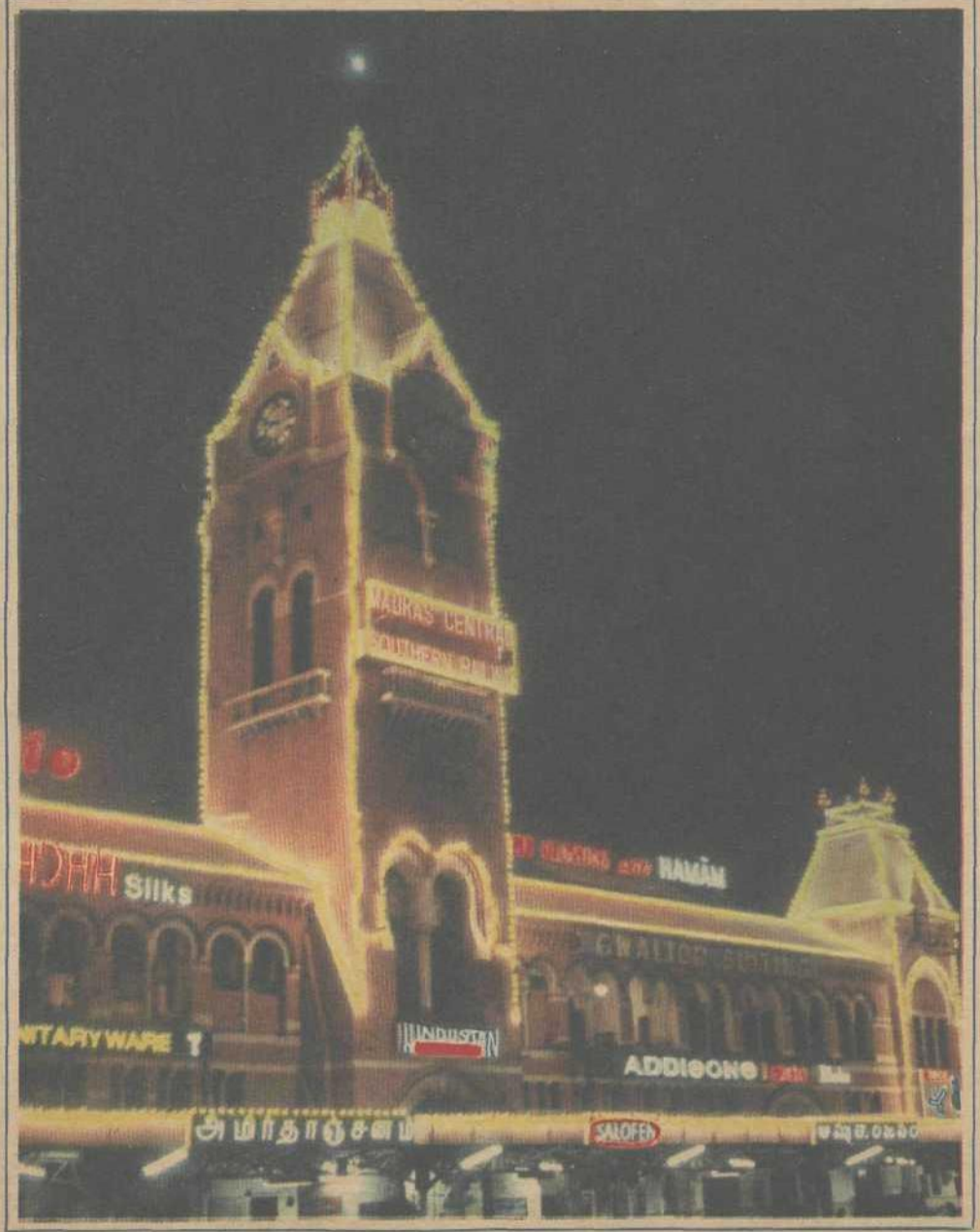

Photo by: PUSHPA

बच्चों रंग दो चिक्लेट्स जोकर

और इनाम लो तुम खुश हो कर

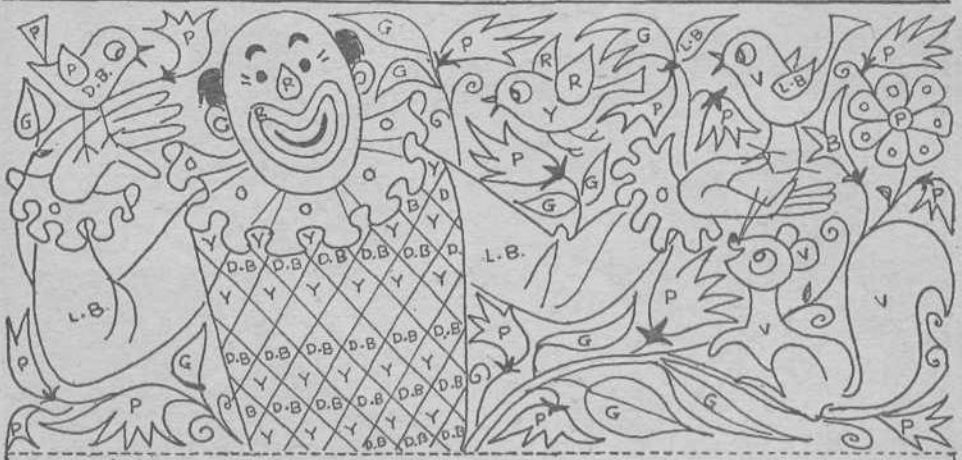

यह आसान है और मज़ेदार भी. निर्देशित चित्र तालिका के अनुसार ऊपर के चित्र तथा उसमें के चिक्लेट्स जोकर में रंग भरो. उदाहरण के लिए, जहां-जहां पर P लिखा है वहां गुलाबी रंग भरो. वैसे ही R वाली जगहों में लाल रंग भरो. रंग भर लेने के बाद रंगीन चित्र को नीचे दिये गए कूपन तथा १२ पैकेट वाले चिक्लेट्स के एक खाली पैकेट के साथ इस पते पर भेज दो:

Chiclets Product Officer

CH

Post Box 9116 Bombay 25.

१५ साल से कम उम्रवाले बच्चे ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं.

पहले प्राप्त होने वाले १०० प्रवेश पत्रों (प्रत्येक भाषा में १०) पर प्रत्येक को मिलेंगे ४ कॉमिक या 'वर्ल्ड १००' के विभिन्न डाक टिकट.

रंग तालिका: P—गुलाबी; R—लाल; O—नारंगी; L.B.—हल्का नीला; D.B.—गाढ़ा नीला; G—हरा; V—बैंजनी; तथा Y—पीला.

मेरा नाम.....

पता.....

.....

.....

मेरी पसंद है ४ कॉमिक या 'वर्ल्ड १००' के विभिन्न डाक टिकट (अपनी पसंद पर निशान लगा दीजिए)

चिक्लेट्स—विटामिन ए और डी तथा कैल्शियम सहित मज़ेदार चूइंग गम

WH.5654 R

हमने कल भूले पर

लोटपोट

पढ़ी...और हंसते हंसते **लोटपोट** हो गए!

हर अंक के साथ 25 से 40 पैसे तक के मूल्य का उपहार मुफ़्त

मूल्य प्रति अंक **70** पैसे

लोटपोट

ए-5 मायापुरी, नई देहली-27

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

इस महीने की बेताल कथा 'पितृधर्म' है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने पुत्र तथा पिता के दायित्व का पालन करना चाहिये। साधारणतः इन दोनों उत्तर-दायित्वों के बीच कोई विरोधभाव नहीं है। किंतु ऐसा विरोधभाव हम इस कहानी में देखते हैं।

एक जमाने में 'चोरविद्या' को चौंसठ कलाओं में एक माना जाता था। मगर चोर समाज के द्रोही हैं, अतः उस विद्या के प्रति आदरभाव नहीं रहा, लेकिन वह एक कठिन विद्या है।

वर्ष : २५ मार्च १९७३ अंक : ९

ईमानदारी का फल

एक जमीन्दार के चार बेटियाँ थीं। जब वे शादी के योग्य हो गयीं, तब एक लड़की को छोड़ शेष तीन लड़कीयों की शादी कर चुके। सब की शादियाँ इस शर्त पर की गयी कि वर घर जमाये दामाद बन कर रहें।

अब चौथी लड़की की शादी करनी थी। पर चौथी लड़की ने हठ किया कि वह अपने घर के नौकर राम के साथ ही शादी करेगी। राम बचपन से ही जमीन्दार के घर पलते काम करता रहा। जमीन्दार को यह रिश्ता कभी पसंद न था। फिर भी उसने अपनी आखिरी लड़की की शादी राम के साथ कर दी और कहा–"बेटी, मैं तुम्हारे पति को अपने घर नहीं रख सकता। तुम उसके साथ जाकर अपनी गृहस्थी संभाल लो। मैंने तुम्हारी इच्छा की पूर्ति की। मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे द्वारा तुम्हारी बहनों और बहनोइयों का अपमान हो।"

यह खबर सुनते ही राम घर से भाग गया। वह यह नहीं चाहता था कि उसके कारण जमीन्दार की बेटी दासी बन जाय। उसने सोचा कि वह अपनी क़िस्मत की खोज करेगा और जब वह अपनी पत्नी को इज्जत के साथ जीने का मौक़ा दे सकेगा तभी वह घर लौट आयेगा।

इस ख्याल से राम चलता गया। दूसरे दिन दुपहर तक वह एक शहर के निकट के जंगल में पहुँचा। जंगल के बीच एक मैदान था। उस मैदान में गायों की रेवड़ घास चर रही थी। एक पेड़ की छाया में बैठ कर एक वृद्ध खाने जा रहा था।

इतने में एक गाभिन गाय रंभाने लगी। वृद्ध खाने की पोटली वहीं छोड़ गाय के पास दौड़कर पहुँचा। गाय के बच्चा

रविशंकर

देने तक वह वहीं रहा। वृद्ध के दूर जाते ही कौए और कुत्ते झपटने लगे। राम ने उन सब को भगाया और वृद्ध के लौटने तक वह पहरा देता रहा।

"बेटे, तुम ने मेरे खाने को कुत्तों और कौओं से बचाकर बड़ा अच्छा काम किया। तुम कौन हो? कहाँ से आते हो?" वृद्ध ने पूछा।

"मैं जीविका की खोज में जा रहा हूँ। मेरा अपना कोई गाँव नहीं है और न अपने कोई है!" राम ने जवाब दिया।

वृद्ध ने थोड़ा सा खाना राम को दिया, और अपनी सारी कहानी उसे सुनायी।

उस वृद्ध के पास एक सौ गायों की रेवड़ है, लेकिन उसके कोई संतान नहीं है। गायें चराने के लिए पहले उसने नौकर रखे थे। मगर वे गायों को बेचकर रुपये हड़प ले जाते थे। इसलिए उन लोगों से तंग आकर वृद्ध स्वयं गायें चराता था। वृद्ध की कहानी सुनकर राम ने कहा–"इस बुढ़ापे में आपकी और गायों की सेवा मैं करूँगा, बदले में आप जो उचित समझें, सो मुझे दे दीजिये।"

वृद्ध ने मान लिया। राम गायों के दुहने से लेकर दूध बेचकर रुपये लाना, गायों को चराना, उनकी देखभाल करना आदि सारे काम करने लगा।

दो सप्ताह बीत गये। इस बीच वृद्ध ने राम की कई तरह से परीक्षा ली। उसे मालूम हो गया कि राम ईमानदार है। इस पर उसने राम से कहा–"बेटा, मैं कोई अच्छा रिश्ता देख तुम्हारी शादी करना चाहता हूँ।"

"मालिक, माफ़ कीजियेगा, मेरी शादी हो चुकी है। मैं धन कमाकर अपने परिवार को संभालने के ख्याल से निकल पड़ा हूँ।" राम ने अपनी कहानी बतायी।

वृद्ध ने राम की कहानी सुनकर कहा–"तब तो तुम इससे कोई अच्छा काम क्यों देख नहीं लेते? मेरे पास काम करने से तुम्हें क्या हाथ लगेगा?"

राम ने हँस कर जवाब दिया–"मालिक, मैं इससे ज़्यादा आमदनीवाला काम क्या कर सकता हूँ ? मैं धन कमाने की शक्ति भी नहीं रखता हूँ। यदि धन मुझे प्राप्त हो तो अपनी क़िस्मत से ही प्राप्त होना चाहिये। जब से मैंने होश संभाला, तब से मैं ऐसे ही काम करते आ रहा हूँ। अलावा इसके घर छोड़ने के बाद मैंने पहले आप ही के हाथ का खाना खाया है। इसलिए आप को ख़ुश रखना ही मेरा पहला कर्तव्य है।"

राम की बातें सुन वृद्ध मौन रह गया।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन वृद्ध ने राम से कहा–"बेटा, गायों के लिए नयी झोंपड़ी बनवा दे तो अच्छा होगा। आज रात को तुम उस जगह गड्ढे खोद लो, जहाँ पर मैंने निशाने रखे हैं, उसमें खम्भे गाड़ने हैं। बाक़ी काम कल देख लेंगे।"

उस रात को वृद्ध के सोने के बाद राम ने गड्ढे खोदे। दोनों गड्ढों में धन से भरी हँड़ियाँ मिल गयीं। राम ने सावधानी से उन्हें घर के भीतर रखा और सवेरा होते ही उन्हें वृद्ध को सौंप दिया। वृद्ध ने उन हँड़ियों की ओर देखते कहा–"राम, तुम जिस क़िस्मत का इंतज़ार करते थे, वह हाथ लग गयी। इस धन को लेकर तुम अपनी पत्नी के पास क्यों नहीं गये ?" वास्तव में वृद्ध ने राम की जांच करने के लिए वे हँड़ियाँ रखवायी थीं।

"मालिक, यह तो आप का धन है। आप का धन मेरी क़िस्मत कैसे हो सकता है?" राम ने जवाब दिया।

"बेटा, ऐसी बात नहीं। तुम मेरी सारी जायदाद के वारिस हो। यदि तुम इस धन से जमीन्दार के दामाद सच्चे अर्थों में बन सकते हो तो ले चलो। नहीं, तो तुम अपनी पत्नी को यही पर ले आओ। तुम्हीं मेरे बेटे हो और तुम्हारी पत्नी को मैं पतोहू समझूंगा।" वृद्ध ने समझाया।

राम जमीन्दार के घर गया। अपनी पत्नी को लेकर वापस लौट आया। इसके बाद वह वृद्ध की जायदाद का वारिस बनकर आराम से जीने लगा।

धनी और दरिद्र

एक गाँव में दो भाई थे। बड़ा भाई धनी था और दूसरा दरिद्र।

एक साल की बात है। खेत में फ़सल की कटाई समाप्त हो गयी थी। उस खेत में छोटा भाई पहरा दे रहा था। वह एक ढ़ेर के पास बैठकर अपनी दीनता पर सोच रहा था, तब सफ़ेद वस्त्र पहनी एक स्त्री वहीं आ पहुँची, खेत में टहलते धान के बालों को चुनकर जलाने लगी।

उस स्त्री के निकट आते ही छोटे भाई ने उसका हाथ पकड़कर पूछा–"बहन, तुम कौन हो? यह तुम क्या करती हो?"

"मैं तुम्हारे बड़े भाई की भाग्यदेवी हूँ। गिरे हुए बालों को व्यर्थ से जाने से रोकने के लिए जला रही हूँ।" स्त्री ने उत्तर दिया।

"ओह, ऐसी बात है? तब तो मेरी भाग्यदेवी कहाँ पर है?" छोटे ने पूछा।

"सामने दिखाई देनेवाले पहाड़ों के उस पार है।" यों कहकर वह अदृश्य हो गयी। उसी समय अपनी भाग्यदेवी की खोज़ में जाने का छोटे भाई ने निश्चय कर लिया। यह निश्चय करके वह अपनी झोंपड़ी में गया। अपनी थोड़ी-बहुत जो संपत्ति थी, उसे एक गठरी में बाँध चलने को हुआ।

इतने में चूल्हे के पीछे से दरिद्रता की देवी उठकर उसके निकट आयी, ज़ोर-शोर से रोते हुए बोली–"तुम मुझे यहाँ छोड़कर जा रहे हो? मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

छोटे भाई ने समझाया कि मुझे बहुत दूर जाना है, तुम कमज़ोर हो, इसलिए मेरे साथ चल नहीं सकोगी, लेकिन उस स्त्री ने नहीं माना।

अंत में छोटा भाई बोला–"अच्छी बात है, तुमको भी साथ ले जाता हूँ, तुम इस बोतल में घुस जाओ।"

बोहीमिया की लोक कथा

दरिद्रदेवी छोटी बनकर बोतल में घुस गयी। छोटे भाई ने बोतल को काग से बंद किया। तब वह घर से चल पड़ा। रास्ते में उसे एक जगह गहरी दलदल दिखाई दी। छोटे भाई ने दरिद्रतादेवीवाले बोतल को दलदल में ठोंस दिया और उससे पिंड छुड़ाकर आगे बढ़ा।

कई दिन की यात्रा के बाद छोटा भाई दक्षिणी पहाड़ों को पारकर एक शहर में पहुँचा। वहाँ के एक बुजुर्ग ने छोटे भाई को एक काम सौंपना चाहा। छोटे भाई ने मान लिया। तब उस बुजुर्ग ने कहा– "मुझे एक कंदक खोदकर देना है। बदले में मैं तुम्हें कोई तनख़्वाह नहीं दूँगा। लेकिन कंदक खोदते समय तुम्हें जो भी खज़ाना मिलेगा, वह तुम्हारा हो जायगा।"

इस शर्त को छोट भाई ने मान लिया और वह कंदक खोदने लगा। एक घंटे भर ही वह कंदक खोद पाया था कि उसे बहुत-सा सोना मिला। बुजुर्ग ने वह सोना छोटे भाई को दिया, लेकिन छोटे भाई ने उसमें आधा अंश बुजुर्ग को दिया।

छोटा भाई यहीं पर रुका नहीं, वह और खोदता गया। आखिर उसे एक झोंपड़ी जैसी कोई चीज़ दिखाई दी। उसमें सोने के सिक्के और जवाहरातों के ढ़ेर लगे थे। उनके साथ एक भारी पेटी भी निकल आयी। उस पेटी में से यह चिल्लाहट सुनाई देने लगी–"तुम जल्दी पेटी खोल दो।"

छोटे भाई ने पेटी खोल दी। उसमें से एक स्त्री बाहर आयी। वह भी सफ़ेद वस्त्र धारण किये हुए थी।

"तुम कौन हो?" छोटे भाई ने पूछा।

"मैं तुम्हारी भाग्यदेवी हूँ। तुम मेरी ही खोज़ करते हो न? आज से मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को कभी नहीं छोड़ूंगी।" ये शब्द कहकर वह स्त्री अदृश्य हो गयी।

कंदक में जो खज़ाना मिला। उसे बुजुर्ग और छोटे भाई ने बराबर बांट लिया।

अब छोटा भाई करोड़पति बन गया था। मगर वह अपनी पहले की दरिद्रता को भूला नहीं। अपने गाँव को लौटने के बाद भी वह दरिद्रों की सहायता करता ही रहा।

एक दिन दोनों भाइयों की एक गली में मुलाक़ात हो गयी। छोटे भाई ने अपने बड़े भाई के साथ आलिंगन किया और उसे अपने घर ले आया। उसे सारी बातें सुनायीं। छोटे भाई ने बड़े भाई को कई दिन अपने घर में रखा, उसे दावतें दीं, बड़े भाई के लौटते वक़्त उसे, उसकी पत्नी और बच्चों को भी क़ीमती उपहार देकर भेज दिया।

छोटे भाई का वैभव देख बड़ा भाई ईर्ष्या से भर उठा। उसके मन में यह कुविचार पैदा हो गया कि दरिद्रदेवी को फिर उसके घर बिठाना है।

वह अपने छोटे भाई के द्वारा बतायी गयी दलदल के पास पहुँचा। बडी देर तक खोज़ करके उस बोतल को बाहर निकाला और उससे बँधे काग को खोल दिया।

दूसरे ही क्षण बोतल में से दरिद्रदेवी बाहर निकली और बड़े भाई के गले लगकर बोली–"तुम कैसे पुण्यात्मा हो? तुमने मेरा यह जो उपकार किया, इसके बदले में मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगी, मैं अपनी ज़िंदगी भर तुम्हारे ही साथ रहूँगी।"

बड़े भाई ने फिर दरिद्रदेवी को दलदल में गाड़ देना चाहा, लेकिन वह सफल नहीं हो सका। रास्ते में लुटेरों ने उसे लूट लिया। उसके भाई ने जो क़ीमती उपहार दिये थे, उनसे भी वह हाथ धो बैठा। घर लौटने पर उसने देखा कि उसके घर, पुआल के ढ़ेर, धान वगैरह सब जल चुके हैं। बाढ़ के आने से उसके खेतों की फसल बह गयी है। उसका यों सर्वनाश हो गया था।

सिंह श्शिशु रपि निपतति मदमलिन कपोलभित्तिषु गजेषु,
प्रकृति रियम् सत्त्ववताम् न खलु वय स्तेजसाम् हेतुः ॥ १ ॥

[शावक होने पर भी सिंह मत्त हाथी के कुंभस्थल पर चढ़ बैठता है। इसलिए सत्त्ववानों की प्रतिभा का आयु के साथ कोई संबंध नहीं होता।]

रथस्यैकम् चक्रम्, भुजगनमिता स्सप्ततुरगा,
निरालंबो मार्गः चरणविकल स्सारथिरपि,
रवि र्यात्ये वांतम् प्रतिदिन मपारस्य, नभसः;
क्रियासिद्धि स्सत्त्वे भवति महताम् नोपकरणे ॥ २ ॥

[एक पहियेवाला रथ, सर्प ही बागड़ोर हो, आधार विहीन पथ, लंगड़ा सारथी (अनूर) के होते हुए भी सूर्य आकाश में यात्रा कर रहा है। ऐसे ही क्या सत्त्ववान महात्माओं के लिए साधनों की आवश्यकता है क्या?]

विजेतव्वा लंका, चरणतरणीयो जलनिधिः,
विपक्षः पौलस्थ्यो, रणभुवि सहायाश्च कपयः,
पदाति र्मर्त्योसौ सकलमवधी द्राक्षसकुलम्;
क्रियासिद्धि स्सत्त्वे भवति महताम् नोपकरणे ॥ ३ ॥

[जीतना है लंकापुरी को, पैदल समुद्र को पार करना है, शत्रु रावण है, सहायक वानर हैं। वह (राम) मानव मात्र है। फिर भी उसने राक्षस-समूह का वध किया है। इसलिए क्या सत्त्ववान महात्माओं के लिए साधनों की आवश्यकता है?]

यक्ष पर्वत

[९]

[खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने सिंह को एक और शिथिल भवन में भगा दिया और उस प्रदेश से भाग जाने के लिए रास्ते की खोज करते निकल पड़े। उन्हें एक कमरे में अनाज के बोरे दिखाई दिये, उनमें दोनों ने आग लगायी, तभी बगल के कमरे में से चिल्लाहटें सुनायी दीं। भीतर जाकर देखा तो एक वृद्ध दिखाई पड़ा। बाद...]

खड्गवर्मा और जीवदत्त को देखते ही वृद्ध ने पूछा–"तुम कौन हो? उस बदमाश पुजारिणी के शिष्य तो मालूम नहीं होते? चाहे कोई भी हो, मेरी रक्षा करो। शायद बगल के कमरे में अनाज जल रहा है। उस के ताप से झुलस जाने के कारण मुझे बांधी गयी दीवार गरम हो कर मेरे शरीर को जला रही है। जल्दी करो।"

"थोड़ी देर में कमरे की सारी छत टूट कर गिर जायगी।" यों कहते जीवदत्त वृद्ध के निकट चला गया। अपने दण्ड से उसे बांधी गयी जंजीरों को तोड़ दिया और उसका हाथ पकड़ कर तुरंत बाहर खींच लाया।

वृद्ध ने एक बार चारों ओर बड़ी आतुरता से देखा और कहा–"ओह! कितने दिन बाद मुझे आजादी मिल गयी। क्या

वह दुष्ट पुजारिणी अब तक इस शिथिल नगर में अधिकार चला रही है? तुम लोग कौन हो? किसलिए यहाँ पर आये हुए हो? अपना परिचय दो!"

"हम चाहें जो भी हों, मगर तुम जिस पुजारिणी की बात बताते हो, हम उसके शिष्य नहीं! विन्ध्याचल में एक बहुत बड़ा कार्य साधने हम चल पड़े। मगर रास्ते में छोटी-बड़ी रुकावटों और मुसीबतों में फँस कर यहाँ पहुँचे। हम को भी यहाँ पर बन्दी बनाने का प्रयत्न किया गया। तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम ही यहाँ के सच्चे पुजारी हो और इस वक़्त अधिकार चलानेवाली पुजारिणी ने तुम को अंधेरी कोठरी में बांध रखा है! यह बात सही है न?" जीवदत्त ने पूछा।

"हाँ, तुम ठीक कहते हो। वह दुष्ट औरत आज से ठीक बीस साल पहले मुझे इस जंगल में एक बालिका के रूप में प्राप्त हुई थी। मैंने उस पर रहम खाकर बचाया, पाला-पोसा, सारी विद्याएँ और मंत्र-तंत्र भी उसे सिखाये। मगर मेरे प्रति बिना किसी प्रकार की कृतज्ञता के दो साल पहले एक भयंकर रात्रि में जब की आसमान में बादल गरज रहे थे और मूसलधार वर्षा हो रही थी, तब उसने ……।"

जीवदत्त ने वृद्ध मांत्रिक की बातों को काटते हुए कहा–"तुम्हारी पूरी कहानी सुनने को हमारे पास समय नहीं है। हम पुजारिणी के चंगुल से बच कर जंगल में जाना चाहते हैं। वह हमें बन्दी बनाने के लिए अब तक रवाना हो चुकी होगी। हमें जल्दी जाना है। क्या तुम यही रहना चाहते हो? या इस गिरनेवाले खण्डहरों से बच कर बाहर जाने का मार्ग हमें दिखा कर हमारे साथ जंगलों में पहुँचना चाहते हो?"

"मैं उस दुष्ट पुजारिणी से बदला लिये बिना, उसकी हड्डी-पसली तोड़ो बिना यहाँ से नहीं हिलूंगा। अगर मेरे पुराने शिष्य मुझे इस हालत में देखेंगे तो वे अवश्य मेरे

पक्ष में हो जायेंगे। उन की मदद से उस नीच पुजारिणी को बन्दी बना कर उसके जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा और उसका मांस बाज तथा चीलों का आहार बनाऊँगा, तभी जाकर मेरा दिल ठण्डा होगा।" वृद्ध मांत्रिक ने जवाब दिया।

ये बातें सुन खड्गवर्मा अनिच्छा से सर हिलाते बोला–"जीवदत्त! हमें अब अपने रास्ते जाना ज़्यादा उचित होगा! ये मांत्रिक और पुजारिणी आपस में एक दूसरे का सर काट लेने दो।" यों कहते वह चल पड़ा।

जीवदत्त भी खड्गवर्मा के साथ रवाना होते हुए बोला–"उस दुष्ट पुजारिणी को पकड़ कर उसके मांस के टुकड़े करके चील और बाजों का आहार क्यों बनना चाहते हो? इस प्रदेश में एक भूखा सिंह घूम रहा है। उसका खाना बना दो। तुम्हारा पुण्य भी होगा और उसका पेट भी भर सकता है!"

वृद्ध मांत्रिक कुछ बोलने को हुआ। तभी शिथिल भवन के पीछे से पुजारिणी एक मांत्रिक, जटाधारी भूत तथा पांच-छे शिष्यों को साथ ले वहाँ आ पहुँची और वह वृद्ध मांत्रिक, खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को देख आँखें लाल-पीली करते अपने त्रिशूल को ऊपर उठा कर गरज उठी–"ओह, यह बूढ़ा अंधेरी कोठरी से निकल आया है? चोरों की भांति हमारे नगर में प्रवेश करनेवाले युवक भी यहीं पर हैं? तुम लोगों का अंतिम समय निकट आया मालूम होता है। सब को पकड़ कर मैं महाभूत की बलि दे दूँगी।" यां कहते वह आगे बढ़ी।

खड्गवर्मा ने झट चार क़दम पीछे हट कर अपने बाण का पुजारिणी की ओर निशाना लगाया और सचेत किया–"पुजारिणी, तुमने अपना एक भी क़दम आगे बढ़ाया तो यह तेज बाण तुम्हारे कण्ठ को छेद डालेगा, सावधान!"

यह चेतावनी सुनकर पुजारिणी जड़वत् वहीं रह गयी। मांत्रिक और जटाधारी

भूत उससे थोड़ा हट कर खड़े हो गये। एक-दो क्षण मौन रहने के बाद पुजारिणी के एक शिष्य ने अपने शूल को हवा में लहराते कहा–"महाशक्ति पुजारिणी! देरी क्यों करती हो? इस वृद्ध पुजारी और इन युवकों को भी अपने मंत्र के बल से भस्म कर दो।"

"नहीं, मैं इन्हें इतनी आसानी से भस्म करना नहीं चाहती। इन तीनों को प्राणों के साथ पकड़ कर महाभूत को बलि देनी है।" यों कहते पुजारिणी बगल की ओर मुड़कर मांत्रिक और जटाधारी भूत से बोली–"अरे, तुम लोग पत्थर की भांति देखते क्यों खड़े हो? तुम पहले उन दोनों युवकों को बन्दी बनाओ। इस बीच मैं इस वृद्ध मांत्रिक की ख़बर लेती हूँ।"

ये बातें सुन खड्गवर्मा और जीवदत्त ठठाकर हँस पड़े। जीवदत्त ने जटाधारी भूत की ओर एक क़दम बढ़ा कर कहा–"अरे, विकृत भूत! हम नहीं जानते कि तुम नर भूत हो या मादा भूत! तुम्हारी पुजारिणी की आज्ञा का पालन किये बिना ताकते क्यों खड़े हो?"

जटाधारी भूत घबरा गया, मांत्रिक के पास जाकर बोला–"गुरूजी! अब क्या करूँ? क्या उन दोनों को पकड़ कर कच्चा चबा लूं?"

"अरे शिष्य! ऐसा न करो। यह तो महान अपराध होगा। पुजारिणीजी उन्हें प्राणों के साथ पकड़ कर महाभूत का आहार बना देनेवाली है। हमें जल्दी नहीं मचानी है।" गुरु मांत्रिक ने समझाया।

मांत्रिक की बातें सुन पुजारिणी ने अपनी आँखें लाल कीं, शूल उठाकर उसकी ओर बढ़ने लगी। तभी खड्गवर्मा ने ललकारा–"ठहर जाओ पुजारिणी, मेरी चेतावनी याद है न? तुम ज़रा भी हिली तो तुम्हारे कंठ में मेरा यह बाण जा घुसेगा? तुम हिले-डुले बिना अपनी मंत्र-शक्ति से अपने शत्रु का अंत कर दो। हमें कोई आपत्ति नहीं है।"

ये सारी घटनाएँ एकटक देखनेवाले वृद्ध पुजारी ने उच्च स्वर में कहा–"इस वक़्त उस गुरुद्रोहिणी के पास किसी भी प्रकार की मंत्र शक्तियाँ नहीं हैं, मैंने सब को वापस ले लिया है।"

"अरे, यह सब सरासर झूठ है। तुम लोग इस कमबख़्त बूढ़े की बातों पर यक़ीन मत करो। अरे शिष्यो, देखो, मैं अभी उसे अपना शूल घुसेड़कर उसे ऊपर उठा देती हूँ।" यों कहते पुजारिणी वृद्ध पुजारी की ओर बढ़ी।

"ठहर जाओ।" इन शब्दों के साथ खड्गवर्मा ने पुजारिणी के हाथ पर बाण चलाया। "उफ़!" कहते पीड़ा के साथ पुजारिणी चिल्ला पड़ी। उसके हाथ से शूल नीचे जा गिरा।

"पुजारिणी! तुम ने मेरी चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, इसलिए विवश होकर तुम पर मुझे बाण का प्रयोग करना पड़ा। अब भी सही, सावधान रहो।" खड्गवर्मा ने फिर चेतावनी दी।

पुजारिणी के हाथ से शूल के गिरते ही उसके दो शिष्य उछल-कूद करते चिल्लाने लगे–"महान पवित्र शूल को नीचे गिराकर पुजारिणी ने इसे अपवित्र किया है। अब हमारे गुरु तो वृद्ध पुजारी ही हैं। वृद्ध पुजारी की जय।"

"खड्गवर्मा, हम रास्ता भटक कर कैसे बेवकूफ़ों के बीच आ गये हैं? इन शिथिल भवनों में ही इन सब के पड़े रहना उत्तम है। ये लोग बाहर आकर साधारण लोगों के बीच मिल जायेंगे तो वे भी मूर्ख बन जायेंगे।" जीवदत्त ने कहा।

अपने पक्ष में पुजारिणी के दो शिष्यों के आ जाने पर वृद्ध पुजारी प्रसन्न होकर बोला–"ओह, महाभूत! तुम ने कितने दिन बाद मेरे शिष्यों को सत्य का बोध करा कर अंधकार से प्रकाश में पहुँचा दिया। अब तुम को पहले की भांति और ज़्यादा प्राणियों की बलि दूंगा।"

"खड्गवर्मा, यह कमबख्त वृद्ध भी क्रूरता में पुजारिणी से कम नहीं है।" ये बातें कह कर जीवदत्त ने वहाँ के लोगों को संबोधित कर कहा–"तुम लोगों के झगड़े में हम किसी का पक्ष लेना नहीं चाहते। तुम में से कोई एक आकर हमें इस शिथिल नगर के बाहर जंगलों में जाने का रास्ता बतला दो।"

"तुम लोग यहाँ से भाग जाने का रास्ता पूछ रहे हो? वाह, यह कैसी इच्छा है? ठहर जाओ, अभी मैं तुम दोनों को अपने शूल में चुभो कर महाभूत के सामने गिरनेवाली हूँ।" यह कहते पुजारिणी झुककर शूल को अपने हाथ में लेने लगी।

"एक बार इस दुष्टा ने अनुभव किया, फिर भी इसका ज्ञानोदय नहीं हुआ।" यों कहते खड्गवर्मा ने पुजारिणी की ओर एक दूसरे बाण का निशाना बनाया। तभी जीवदत्त ने उसका हाथ पकड़ कर रोक लिया।

"खड्ग, चाहे यह कितनी भी दुष्टा क्यों न हो, पर औरत को कष्ट देना या मारना ठीक नहीं है। उस वृद्ध पुजारी तथा इस पुजारिणी को शिथिल नगर के अधिकार के वास्ते लड़ने दो, बीच में हमें क्या पड़ा है?" यों कहकर जीवदत्त दण्ड उठाकर मांत्रिक और जटाधारी भूत के निकट पहुँचा और डांटकर बोला–"तुम दोनों जंगल के गुफ़ा मार्ग की ओर बढ़ो। ऊँ, देरी न करो।"

मांत्रिक ने वृद्ध पुजारी तथा पुजारिणी की ओर हाथ जोड़ कर नमस्कार करते पूछा–"मेरे गुरुओ, किसी शाप के कारण पिछले चौबीस घंटों से मेरी मंत्र-शक्तियाँ काम नहीं दे रही हैं। क्या मैं इन मानवों के अधीन होकर इन्हें रास्ता दिखाऊँ या आप अपने मंत्र बल के द्वारा मेरी रक्षा करेंगे?"

वृद्ध पुजारी तथा पुजारिणी एक दूसरे के चेहरे देखते मौन रह गये। खड्गवर्मा ने क्षण भर उनकी ओर देखा। अपने म्यान से तलवार खींच कर मांत्रिक और जटाधारी भूत को डांटते क्रोध भरे स्वर में बोला–

"अब ये बेतुकी बातें और मजाक़ छोड़कर चलो, हमें उस गुफा का द्वारा बतला दो।"

तलवार को देखते ही मांत्रिक और जटाधारी भूत कांप उठे। यह कहते गुरु और शिष्य चल पड़े–"हे महावीरो, हमें मत मारो! चलो, हम जंगल में जानेवाले गुफा का सुरंग-मार्ग दिखा देते हैं।"

उन चारों के रवाना होते ही थोड़े ही क्षणों में पीछे वृद्ध पुजारी और पुजारिणी के दल के बीच लड़ाई छिड़ गयी। जीवदत्त ने सर घुमाकर एक बार उनकी ओर देखा, हँसते हुए बोला–"खड्गवर्मा, ये लोग इसलिए लड़ते हैं कि इन में से कौन महाभूत का पुजारी बने। इस झगड़े में ये दगेबाज मांत्रिक और इनके शिष्य भी लड़-मरनेवाले हैं।"

"इन सब दुष्टों को मरने दो। इन खण्डहरों में सिंह को कुछ दिन तक कम से कम खाना मिल जायगा।" खड्गवर्मा ने जवाब दिया।

ये बातें सुन जटाधारी भूत थर थर कांपते हुए मांत्रिक से बोला–"गुरुजी! वह खूंख्वार सिंह रास्ते में किसी गुफा में रहकर हम पर हमला करे तो हम क्या करें?"

"उस पर टूट पड़ो, उसे खा जाओ। कायर कहीं का! चलो।" खड्गवर्मा तलवार झनझनाते बोला।

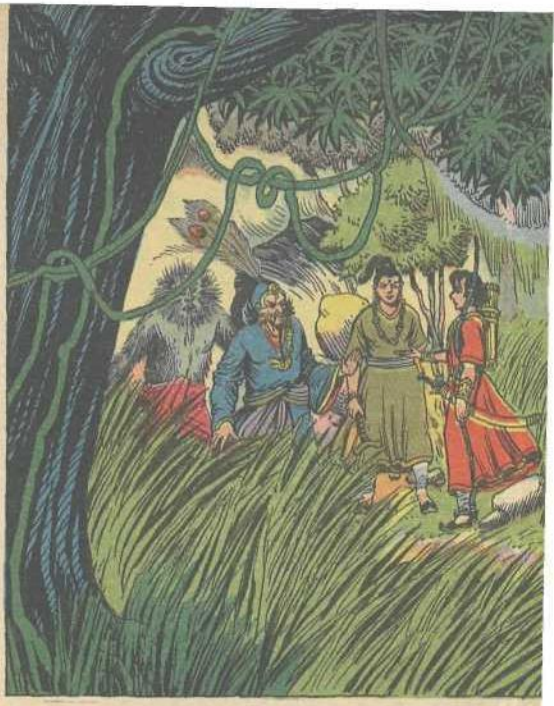

"अरे शिष्य, डरो मत! वह सिंह मुझे दिखाई दे तो अपने मंत्र-बल से मैं उसे कुछ ही क्षणों में बिल्ली में बदल डालूंगा, समझे! लो, हम गुफा के सुरंग तक पहुँच गये हैं। पहले तुम्हारा घुसना अच्छा होगा, चलो।" मांत्रिक ने कहा।

उन गुरु-शिष्यों के पीछे खड्गवर्मा और जीवदत्त उसी सुरंग से आगे बढ़े, जिससे होकर पिछली रात को उन लोगों ने शिथिल नगर में प्रवेश किया था। तब वे जंगल में जानेवाले गुफा द्वार तक पहुँचे। इसके बाद वे गुफा से नीचे उतरे, चारों ओर एक बार नज़र डाल कर जटाधारी भूत और मांत्रिक से बोले–"अब तुम अपने

शिथिल भवनों में लौट कर बड़ी भक्ति के साथ अपने महाभूत की पूजा करो।"

इस पर मांत्रिक ने खड्गवर्मा और जीवदत्त को नमस्कार कर कहा–"महा वीरो, अब हम लौट कर शिथिल नगर में नहीं जायेंगे। दूर दिखाई देनेवाले पहाड़ों में जाकर वहीं पर जैसे-तैसे हम अपने दिन काटेंगे।"

"लेकिन याद रखो, तुम आइंदा लूट-खसोट मत करो। आफ़त में फँस जाओगे। वहाँ तक पहुँचने के पहले तुम लोग गैण्डे की जाति के लोगों की आँखों में मत पड़ो। वे तुम से सख्त नाराज़ हैं।" जीवदत्त ने समझाया।

मांत्रिक और जटाधारी भूत के चले जाने पर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने नदी में उतर कर स्नान किया। निकट के जंगलों में जाकर फल तोड़े, पेट भर कर एक घंटा पेड़ के नीचे आराम किया, तब नदी के बहाव की ओर चल पड़े। उनके मन में यह आशा बंध गयी कि स्वर्णाचारी को पकड़ कर ले जानेवाले लुटेरे इसी प्रदेश में कहीं होंगे। तब उन लोगों ने निश्चय कर लिया कि लुटेरों से किसी भी तरह स्वर्णाचारी की रक्षा करनी है।

खड्गवर्मा और जीवदत्त ने घंटे भर नदी के किनारे यात्रा की। उन्हें नदी के किनारे जहाँ-तहाँ छोटे-बड़े कई पहाड़ दिखाई दिये। उन पहाड़ों में कुछ लोग एक ऊँट पर बड़ी बड़ी चट्टानें लाद कर लोगों से खिंचवाते ले जाते दिखाई दिये।

"खड्गवर्मा, ये लोग लुटेरों के दल के होंगे। शायद ये लोग नहीं जानते कि रेतीले मैदान और रेगिस्तानों में घूमनेवाले ऊँटों को पहाड़ों पर चढ़ा कर उन से पत्थर और चट्टानों को खिंचवाना कैसे खतरनाक है?" जीवदत्त ने कहा।

जीवदत्त की बात पूरी होने के पहले ही एक ऊँट, अपने ऊपर सवार व्यक्ति के साथ पहाड़ी आंचल पर फिसलने के कारण औंधे मुँह घाटी में गिर गया।

(और है)

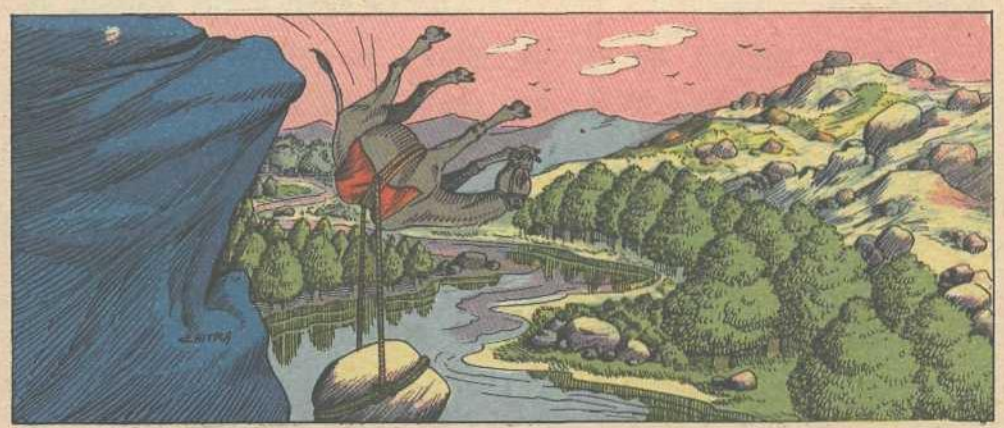

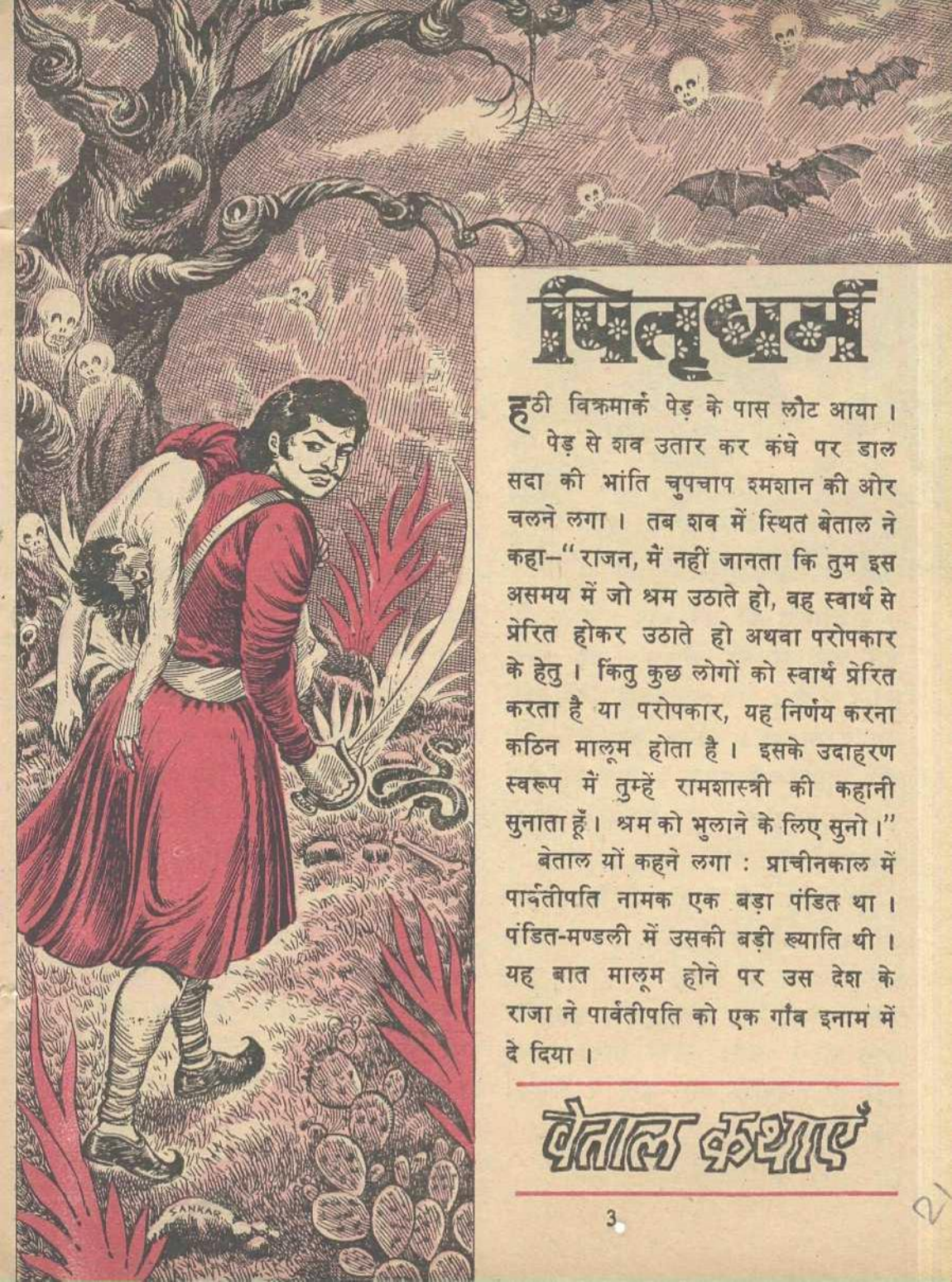

पितृधर्म

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, मैं नहीं जानता कि तुम इस असमय में जो श्रम उठाते हो, वह स्वार्थ से प्रेरित होकर उठाते हो अथवा परोपकार के हेतु। किंतु कुछ लोगों को स्वार्थ प्रेरित करता है या परोपकार, यह निर्णय करना कठिन मालूम होता है। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें रामशास्त्री की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा : प्राचीनकाल में पार्वतीपति नामक एक बड़ा पंडित था। पंडित-मण्डली में उसकी बड़ी ख्याति थी। यह बात मालूम होने पर उस देश के राजा ने पार्वतीपति को एक गाँव इनाम में दे दिया।

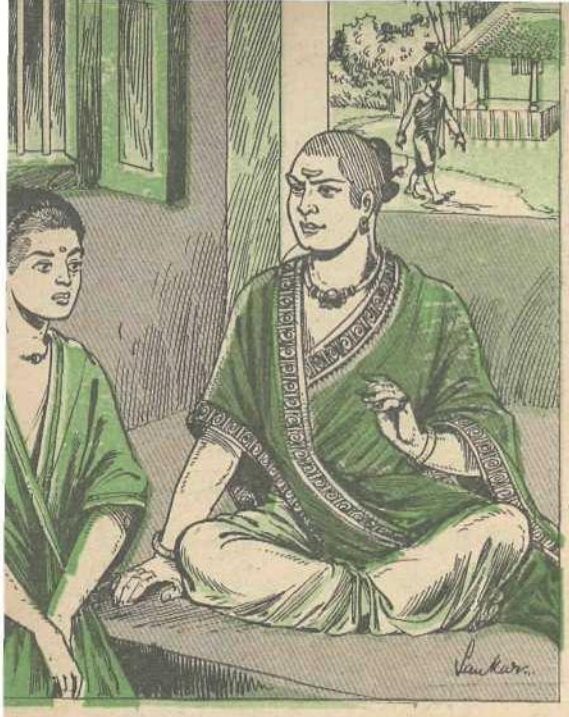

पार्वतीपति को धन और प्रतिष्ठा की कोई कमी न थी, लेकिन उसके कोई संतान न थी। इस कारण वह सदा दुखी रहा करता था। अनेक जप, तप, व्रत और तीर्थयात्राएँ करने के बाद उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उस लड़के का नाम रामशास्त्री रखा गया।

हर पिता यही चाहता है कि उसका पुत्र उससे ज्यादा ख्याति प्राप्त करे। पार्वतीपति ने भी सोचा कि उसका पुत्र प्रकांड पंडित बने, और अपार यश भी प्राप्त करे। मगर उसकी आशा सफल नहीं हुई। क्योंकि वह पढ़ाई में पिछड़ा रह गया।

रामशास्त्री स्वभाव से बड़ा अच्छा था। वह अपने पिता के प्रति श्रद्धा, भक्ति और प्रेम भी रखता था। किंतु शिक्षा में वह कच्चा निकला। वह जो भी सीखता, तुरंत भूल जाता। उसकी बुद्धि मोटी थी। वह जन्मतः मंद बुद्धिवाला था।

पार्वतीपति अपने पुत्र की इस हालत पर बड़ा दुखी हुआ। अगर रामशास्त्री नटखट होता तो पार्वतीपति उसे मार-पीट कर रास्ते पर लाता। लेकिन रामशास्त्री बड़ी लगन और मेहनत के साथ अध्ययन करता, लेकिन वे बातें उसके दिमाग में नहीं बैठतीं। यदि दिमाग मे बैठ भी जातीं तो वह तुरंत उन बातों को भूल जाता। धीरे-धीरे वह बड़ा होता गया।

एक बार पार्वतीपति के बचपन का मित्र चन्द्रभट्ट उसे देखने आया। चन्द्रभट्ट पड़ोसी राज्य का दरबारी पंडित था। जब चन्द्रभट्ट आया, तब पार्वतीपति घर पर न था। रामशास्त्री ने ही उसका परामर्श किया।

"तुम पार्वतीपति के पुत्र हो न बेटा?" चन्द्रभट्ट ने पूछा। रामशास्त्री ने हाँ भरी।

चन्द्रभट्ट ने रामशास्त्री के साथ कोई चर्चा की और शीघ्र ही जान लिया कि वह युवक बड़ा मूर्ख है। इतने में पार्वतीपति घर लौट आया। बहुत दिन बाद आये

अपने मित्र चन्द्रभट्ट को देख वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने चन्द्रभट्ट से कुशल प्रश्न किये। कुशल प्रश्नों के बाद चन्द्रभट्ट ने कहा–"पार्वतीपति, मैं निश्चित होकर दरबारी पंडित के पद से अवकाश प्राप्त करना चाहता हूँ।"

"क्यों? किसलिए?" पार्वतीपति ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"जब मुझ से अधिक योग्य पंडित मौजूद है, तब मुझे उस पद पर रहना उचित नहीं मालूम होता।" चन्द्रभट्ट ने जवाब दिया।

"तुम से योग्य पंडित कौन है वह?" पार्वतीपति ने पूछा।

"और कौन? मेरा पुत्र ही।" चन्द्रभट्ट ने गर्व के साथ कहा।

यह बात सुनने पर पार्वतीपति ने अपमान के बोझ से सर झुका लिया।

चन्द्रभट्ट ने पहले ही जान लिया था कि रामशास्त्री मूर्ख है। अब पार्वतीपति की व्यथा को जानकर सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में चन्द्रभट्ट ने कहा–"देखो भाई, तुम्हें बहुत समय बाद एक पुत्र हुआ तो अत्यंत लाड़-प्यार से पाल-पोसकर तुमने उसे बिगाड़ दिया है।"

पार्वतीपति इसका कोई जवाब नहीं दे पाया। उसने एक गहरी सांस मात्र ली।

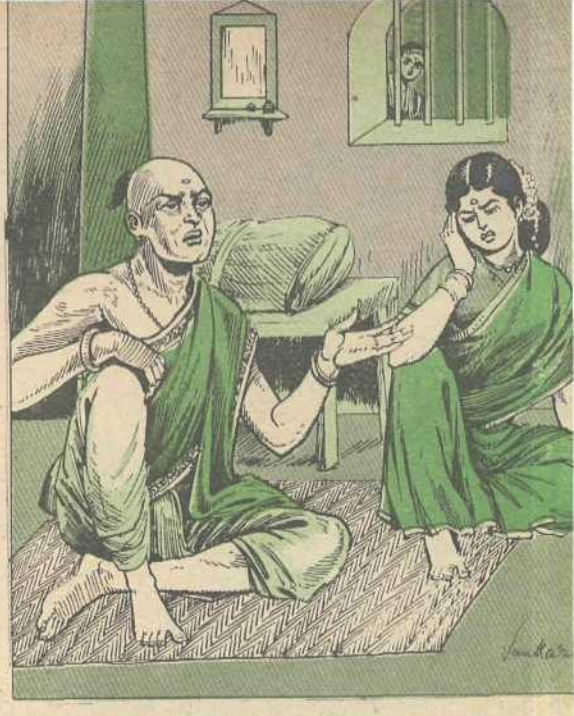

उस दिन रात को भोजन करते समय पार्वतीपति ने अपनी पत्नी से कहा–"छी: छी, ऐसा मूर्ख पुत्र हमें पैदा हो गया है, यह हमारे लिए अत्यंत अपमान की बात है। अगर यह पैदा भी न होता तो अच्छा होता। माता-पिता को अप्रतिष्ठा लानेवाली संतान के होने से न होना ही कहीं उत्तम है।"

रामशास्त्री ओट में रहकर ये बातें सुन रहा था। उसे बड़ा दुख हुआ। उनका ऐसा सोचना रामचास्त्री के लिए अत्यंत पीड़ादायक मालूम हुआ। उस रात को रामशास्त्री यह सोच कर घर से निकल पड़ा कि वह एक महा पंडित बनने के बाद ही घर लौट आयगा।

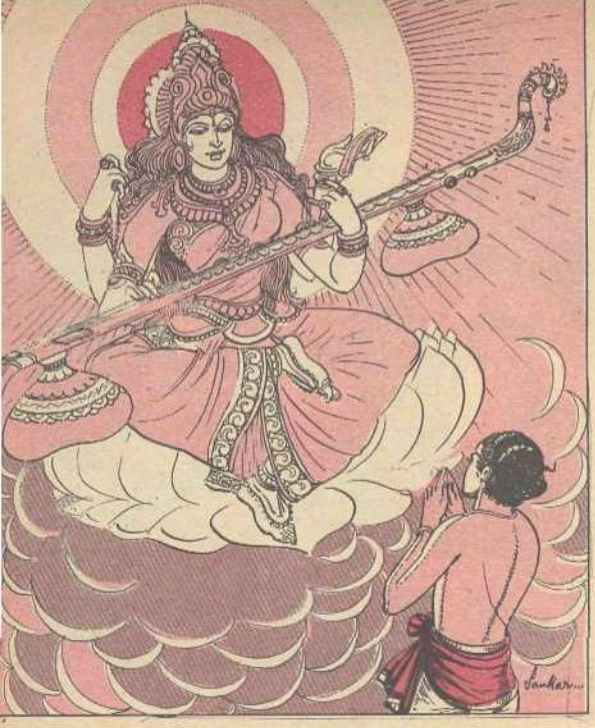

मगर रामशास्त्री की समझ में नहीं आया कि वह महा पंडित कैसे बने ? उसे लगा कि सरस्वती की कृपा प्राप्त किये बिना उसके सामने कोई दूसरा मार्ग नहीं है। उसने बड़ी लगन के साथ सरस्वती के प्रति तपस्या शुरू की।

कुछ समय बाद रामशास्त्री की तपस्या सफल हुई। सरस्वती ने दर्शन देकर कहा—"वत्स, तुम महा पंडित बनना चाहते हो, लेकिन तुम ऐसे ही मूर्ख बने रहोगे, तो तुम्हारे पुत्र असाधारण पंडित होंगे। ऐसा न होकर तुम यदि महा पंडित बनना चाहते हो तो तुम्हारे होनेवाले पुत्र मूर्ख और दुष्ट भी होंगे। इन दोनों में से तुम कौन-सा वर चाहते हो? तुम्हीं निर्णय कर लो।"

रामशास्त्री ये बातें सुनकर आवाक रह गया। थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोला—"माँ, मैं महा पंडित ही बनना चाहता हूँ।"

"तथास्तु!" कहकर सरस्वती अदृश्य हो गयी।

सरस्वती की कृपा से रामशास्त्री समस्त विद्याओं में पारंगत बना। वह रास्ते में पड़नेवाले सभी पंडितों को हराते घर लौट आया। मूर्ख के रूप में घर छोड़ पंडित बनकर घर लौटने पर पार्वतीपति अपने पुत्र पर प्रसन्न हुआ। वह अपने जीवनपर्यंत प्रसन्न ही रहा।

घर लौटने के थोड़े समय बाद रामशास्त्री का विवाह हुआ। दो वर्ष बाद उसे एक पुत्र भी हुआ। ज्यों ज्यों वह लड़का बड़ा होता गया, त्यों त्यों सरस्वती की बात सच निकलती गयी। वह लड़का मूर्ख और दुष्ट भी निकला। उसकी वजह से रामशास्त्री को बार-बार अपमानित होना पड़ता था और साथ ही दूसरों की निंदा का पात्र भी बनना पड़ता था। वह यह सोचकर अत्यंत विकल हुआ कि अपने पुत्र की इस हालत का कारण कोई और नहीं, वह स्वयं है।

हालत को खराब होते देख रामशास्त्री ने पुनः एक बार सरस्वती का ध्यान किया। उनके प्रत्यक्ष होने पर पूछा–"माताजी! क्या मेरे पुत्र के सुधरने का कोई उपाय नहीं है?"

"तुम अपने पुण्य, पांडित्य और उत्तम कार्यों को अपने पुत्र के लिए त्याग दोगे तो वह बिलकुल बदल सकता है।" यह कहकर सरस्वती गायब हो गयीं।

रामशास्त्री ने ऐसा ही किया। उसका पुत्र महान सज्जन पुरुष और उद्दंड पंडित बना। उसने अनुपम कीर्ति भी प्राप्त की।

रामशास्त्री फिर से मूर्ख बना। साथ ही दुष्ट होने का अपयश भी प्राप्त किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, रामशास्त्री के इस कार्य को स्वार्थ कहा जा सकता है या त्याग? यदि वह अपने पुत्र को महान् पंडित देखना चाहता था तो वह मूर्ख ही बना रहता तो कोई समस्या उत्पन्न न होती। ऐसा न होकर वह यह जानते हुए भी कि उसका पुत्र मूर्ख और दुष्ट बनेगा, वह क्यों महा पंडित बना? उसके चरित्र में परस्पर यह विरोधी भाव क्यों है? इसका समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"रामशास्त्री अपने पिता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने के हेतु महा पंडित बन गया है। लेकिन बाद को वह अपने पुत्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करना चाहता था। इसकी पूर्ति के लिए उसे मूर्ख के साथ दुष्ट भी बनना पड़ा। यह विरोधी तत्व उसके स्वभाव में जन्मतः है। यही उसके व्यवहार में प्रकट हो गया है। इस प्रकार रामशास्त्री ने अपने पुत्र-धर्म के साथ पितृधर्म का भी अच्छे ढंग से पालन किया है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

भैंस के सींग

परमानंद गुरु अपने दो शिष्यों के साथ देशाटन पर चल पड़ा। रास्ते में वे एक वन में ठहर गये। रसोई बनाने का निश्चयकर गुरु ने अपने एक शिष्य से गाँव में जाकर मट्ठा लाने को कहा।

शिष्य एक किसान के घर पहुँचा। एक बूढ़ी को देख उसने मट्ठा माँगा। बूढ़ी ने मट्ठा देना स्वीकार किया। इतने में शिष्य की आँखें एक भैंस पर पड़ीं। उसने बूढ़ी से पूछा–"बूढ़ी माँ! इस भैंस के सींग इतने लंबे हैं और दर्वाजा तो छोटा है, अगर भैंस मर गयी तो तुम लोग इसे बाहर कैसे लायेंगे?"

बूढ़ी ने गालियाँ देकर शिष्य को भेज दिया।

अपने पहले शिष्य को जल्दी लौटते न देख परमानंद गुरु ने अपने दूसरे शिष्य को भेजा। उसने भी उसी घर में आकर मट्ठा पूछा। बूढ़ी ने पहले शिष्य की बतायी बातें दूसरे से कह दीं। दूसरे ने हँसकर कहा–"वह मंदबुद्धिवाला है, बूढ़ी माँ! भैंस मर गयी तो सींग काटकर ही सही बाहर खींचकर फेंक देंगे, घर में थोड़े ही रखेंगे?"

इस पर बूढ़ी ने दूसरे शिष्य को भी गालियाँ देकर भगा दिया।

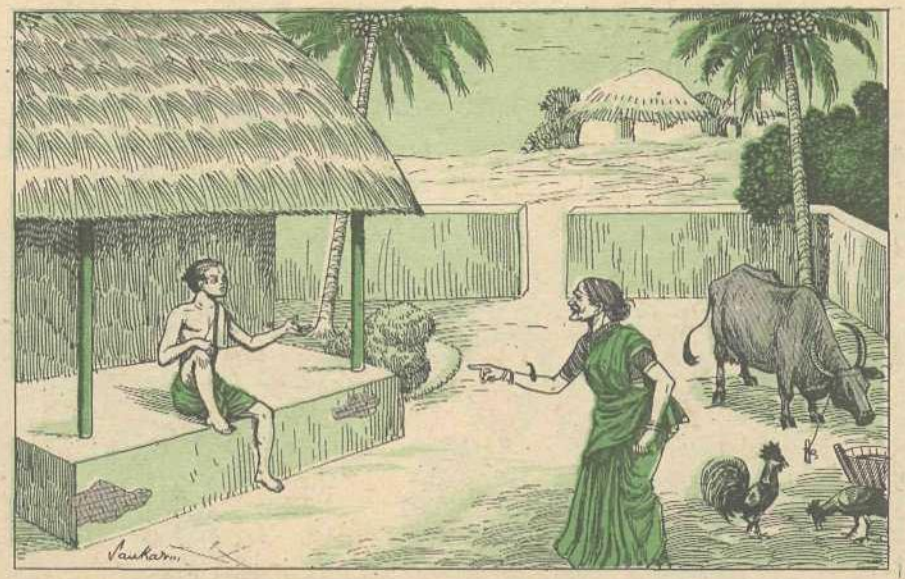

जनेऊ का बोझ

एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण था। वह अनपढ़ था। मगर उसके मन में धन कमाने की प्रबल इच्छा थी।

एक दिन वह ब्राह्मण दूसरे गाँव में गया। वहाँ पर एक चबूतरे पर एक बूढ़ा ब्राह्मण बैठा हुआ था। वह जनेऊ तौल कर बेचता था। वह तराजू के एक पलड़े में जनेऊ डालकर, दूसरे में खरीददारों से पैसे डालने को बतला रहा था। कुछ लोग पलड़े में तांबे के सिक्के डाल रहे थे, तो कुछ लोग चांदी के सिक्के। लेकिन उन सिक्कों के बोझ और जनेऊ के बोझ से कोई संबंध नहीं रखता था।

इसे देख देहाती ब्राह्मण अचरज में आ गया। थोड़ी देर तक वह देखता रहा। तब वह बूढ़े ब्राह्मण के पास जाकर बोला– "महाशय, मैं बड़ा गरीब हूँ, क्या मुझे एक जनेऊ दान में दे सकते हैं?"

बूढ़े ने गरीब ब्राह्मण को एक जनेऊ दिया। तब वह गरीब ब्राह्मण उस देश के राजा के पास पहुँचा और निवेदन किया– "महाराज, मेरे पास एक अनोखा जनेऊ है, आप इसे लेकर इसके वज़न का सोना मुझे दिला दीजिये।"

राजा ने मान लिया। मंत्री ने एक तराजू मंगवाया। एक पलड़े में गरीब ब्राह्मण का जनेऊ और दूसरे पलड़े में थोड़ा-सा सोना डाल दिया, पर जनेऊ का बोझ ज़्यादा था। मंत्री ने थोड़ा और सोना डाला, फिर भी जनेऊ भारी था। मंत्री थोड़ा-थोड़ा करके सोना डालता गया, मगर जनेऊ का बोझ तब भी ज़्यादा था।

इस पर राजा और मंत्री ने एक दूसरे की ओर विस्मय के साथ देखा।

इतने में मंत्री को एक उपाय सूझा। उसने ब्राह्मण से कहा–"अभी भोजन का

चन्द्रभानु त्रिपाठी

वक़्त हो चुका है। बाद को हम तुम्हारे जनेऊ को तौलेंगे। तुम्हारे लिए रसोई बनवा लेता हूँ।" यों कहकर एक नौकर को भेजकर मंत्री ने चावल मंगवाया। ब्राह्मण के देखते जनेऊ के बराबर चावल तौल दिया। पाव सेर चावल जनेऊ के बराबर तुल गये। उस चावल को पका कर ब्राह्मण को खिलाया गया। इससे उसका पेट भर गया।

तब मंत्री ने राजा से गुप्तरूप में यों कहा–"महाराज, मैंने जो सोचा, वही हुआ। यह ब्राह्मण जो जनेऊ लाया है, इसमें एक विचित्र गुण है, उसका वज़न ब्राह्मण की तृप्ति पर आधारित है। वह पाव सेर चावल ही खा सकता है। इसलिए जनेऊ ठीक पाव सेर चावल के बराबर तुल गया। यही सोना हो तो वह ब्राह्मण कभी तृप्त नहीं हो सकता। जितना भी सोना डाल दो, जनेऊ का बोझ भारी होगा।"

"तो फिर हमें क्या करना चाहिए? हमने तो जनेऊ के बराबर का सोना देने का वचन दिया है न?" राजा ने पूछा।

"आप यह जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ दीजिये।" मंत्री ने कहा।

ब्राह्मण भोजन के बाद थोड़ी देर आराम करके लौट आया और बोला–"मुझे जनेऊ के वज़न का सोना देकर भिजवा दीजिये।"

"मैं तुमको सोना दिला सकता हूँ, मगर तुम उसे ढोकर नहीं ले जा सकोगे तो वह तुम्हारे हाथ नहीं लगेगा। तु चोरों से उसकी रक्षा नहीं कर सकते। तुमने देखा ही है, तुम्हारा जनेऊ पाव सेर चावल के बराबर है। क्या तुम रोज़ आकर राजदरबार में भोजन करके जाया करोगे? या सोना ले जाओगे? इनमें से तुम किसे चाहते हो? निर्णय कर लो।" मंत्री ने समझाया।

ब्राह्मण ने सोचा कि उसका जनेऊ पाव सेर सोने का वज़न होगा, उसने कहा–"मुझे रोज भोजन ही दिला दीजिये।"

हाजिर-जवाब

एक राजा के एक पुत्री थी। वह बड़ी बातूनी थी। इसलिए राजा ने यह घोषणा की कि जो युवक अपनी हाज़िरी-जवाबी द्वारा राजकुमारी को हरायेगा, उसके साथ न केवल राजकुमारी का विवाह किया जायगा, बल्कि उसे आधा राज्य भी दिया जायगा। आधा राज्य दहेज़ में राजकुमारी के साथ मिल जायगा, इस लोभ में पड़कर हर कोई राजकुमारी के साथ विवाह करने आगे आया। पर एक युवक भी राजकुमारी के सवालों का सही जवाब नहीं दे पाया।

अंत में राजा ऊब गया। उसने एक शर्त रखी, जो युवक राजकुमारी के सवालों का जवाब न देकर हार जायगा, उसके कान सलाकों से जला दिये जायेंगे।

राजकुमारी की शादी की बात सुनकर तीन भाई घर से चल पड़े। रास्ते में एक जगह उन्हें एक मरी हुई मैना दिखाई दी। तीसरे भाई ने उसे हाथ में लेकर कहा—"बताओ तो, मुझे क्या मिला है?"

"अरे, उसे फेंक दो, वह किस काम की है?" बड़े भाइयों ने दुतकारा।

"शायद यह भी काम आ जाये।" यों कहकर छोटे भाई ने उसे छिपा रखी।

थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर उसे रेशे का गट्ठा मिला और आगे जाने पर छोटे भाई को क्रमशः एक मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा, नर भेड़ के सींग, एक लकड़ी का कील, और एक पुराना जूता भी मिला। बड़े भाइयों ने मना करते रहने पर भी छोटे ने उन सब को रख लिया।

पहले बड़ा भाई राजकुमारी के सवालों का जवाब देने गया ओर बोला—"आज का दिन सुहावना है। यहाँ पर बहुत गर्मी है।"

"उसमें और ज़्यादा गर्मी होगी।" यों कहते राजकुमारी ने एक अलाव दिखाया

नार्वे की लोक कथा

जिसमें लोहे की दो छड़ियाँ जल कर लाल थीं। उन्हें देखते ही बड़े भाई के मुँह से बात नहीं निकली। वह अपने दोनों कानों पर छड़ी के निशान बनाये वापस लौट आया। दूसरे की भी यही हालत हुई।

तीसरे ने जाकर कहा—"बड़ा सुदिन है आज! यहाँ पर न गरमी है और न ठण्ड।"

राजकुमारी ने अलाव दिखाकर कहा—"वहाँ पर देखो, बड़ी गर्मी है।"

"उसमें इस मैना को भून सकते हैं।" छोटे ने जवाब दिया।

"वह टुकड़े बन कर गिर जायगी।" राजकुमारी ने कहा।

"इस रेशे से उसे बांध कर रख सकते हैं।" छोटे ने जवाब दिया।

"वह बहुत ही ढीली हो जायगी।" राजकुमारी ने कहा।

"लकड़ी के इस कील को टोंक दे तो ठीक हो जायगा।" छोटे ने उत्तर दिया।

"उसकी चर्बी बह जायगी।" राजकुमारी ने कहा।

"बर्तन के इस टुकड़े से चर्बी के गिरने से रोक सकता हूँ।" छोटे ने उत्तर दिया।

"तुम हर बात में कोई न कोई टेढ़ी बात बताते हो।" राजकुमारी ने कहा।

"मेरी बातों में क्या टेढ़ी है, इसे देख लो।" यों कहते छोटे ने नर भेड़ का एक सींग दिखाया।

"यह तो हमने कहीं नहीं देखा?" राजकुमारी ने कहा।

"ऐसा ही एक और है।" यों कहकर छोटे ने दूसरा सींग निकालकर दिखाया।

"तुम मुझे हराने के लिए बहुत ही दबते व कुचलते जा रहे हो।" राजकुमारी ने कहा।

"दबने व कुचले जानेवाला मैं नहीं हूँ, यह जूता है।" छोटे ने झट जवाब दिया।

इसके बाद राजकुमारी के मुँह से बात न निकली। उसने अपनी हार मान ली और छोटे भाई के साथ शादी की और दहेज के रूप में आधा राज्य पा लिया।

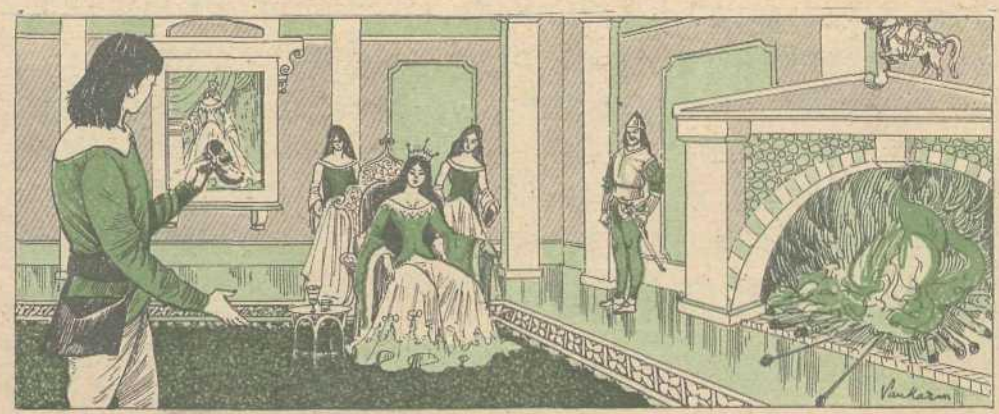

चोर-विद्या

प्राचीन काल में एक राजा के दरबार में एक महा पंडित था। वह समस्त विद्याओं में पारंगत था। एक बार दरबार में यह चर्चा चल पड़ी कि समस्त विद्याओं में कठिन विद्या कौन-सी है? सब पंडितों ने अपने अपने ढंग से जवाब दिये। लेकिन दरबारी पंडित ने कहा–"महाराज, चोर-विद्या सबसे कठिन विद्या है।"

यह उत्तर सुनते ही राजा को क्रोध आया। उसने कड़ककर कहा–"यह कैसा? जो मूर्ख और विद्याओं में कुशल नहीं हो सकते, वे ही चोरी करते हैं। चोरों में प्रतिभाशाली को हम नहीं देख सकते।"

"महाराज! कोई भी बात अनुभव के द्वारा ही साबित हो सकती है! आप छोटी चीज़ जिसकी कोई क़ीमत भी न हो, चुराने की कोशिश कीजियेगा, तब आपको मालूम हो जायगा कि चोर-विद्या कैसी कठिन है!" महा पंडित ने कहा। राजा ने पंडित की बात मान ली।

"आप राजसीवस्त्र धारण करके जायेंगे तो हर कोई प्रसन्नता पूर्वक अपार धन समर्पित कर सकते हैं। लेकिन सच्चा चोर वह होता है जो उस वेष में चोरी करने जाता है जिसे देख कोई उसे आसानी से पहचान न सके। सबकी आँख बचाकर लोगों की पकड़ में आये बिना उनकी संपत्ति को चुराता है। इसलिए आपको भी इसी ढंग से चोरी करनी होगी।" दरबारी पंडित ने समझाया।

राजा ने इसके लिए मान लिया। उसने अपने चेहरे पर कोयले का चूर्ण पोत लिया, काले वस्त्र धारण किये, सच्चे चोर की भांति तैयार होकर आधी रात के वक़्त गहरे अंधेरे में चोरी करने निकल पड़ा। वह अमीरों की बस्ती की ओर

प्रसन्न कुमार यादव

बढ़ा। मगर अमीरों के घरों में प्रवेश करना राजा के लिए संभव न हुआ। कुछ मकानों पर मजबूत किवाड़ लगे थे। कुछ मकानों पर कड़ा पहरा बिठाया गया था। सभी घरों में ऊँची ऊँची चहार दीवारियाँ बनी थीं। राजा ने समझ लिया कि ऐसे मकानों में घुसना मुमक़िन नहीं है।

राजा ने तब सोचा कि दरबारी पंडित ने उससे बड़ी चोरी करने की बात नहीं बतायी, चाहे छोटी-सी चीज़ चुराऊँ तो वह अपने विचार को बदल लेगा। इसलिए राजा अमीरों की बस्ती की ओर बढ़ा। वहाँ पर भी मकानों के द्वार बंद थे।

मगर एक कुम्हार के घर के आगे मिट्टी के बर्तन क़तारों में एक के ऊपर एक करीने से सजाये गये थे। घरवाले मकान के भीतर कुंडी चढ़ाकर सो रहे थे।

राजा ने सोचा कि उन बर्तनों में से एक चुराकर ले जायगा तो पंडित हार जायगा। लेकिन सबसे ऊपरवाला बर्तन निकालना कठिन था। क्यों कि वह ऊँचाई पर था। इसलिए राजा ने बीचवाले बर्तन को निकालना चाहा। तुरंत ऊपरवाले बर्तन हिल उठे और राजा के ऊपर आ गिरे। राजा लुढ़क कर नीचे गिर गया, उसके चारों तरफ़ बर्तनों के टुकड़े फैले हुए थे।

बर्तनों के गिरकर टूटने की आवाज़ सुनकर कुम्हार बाहर आया। उसने चोर को देखते ही ऊँची आवाज़ में चिल्लाना शुरू किया। अड़ोस-पड़ोस के लोग दौड़कर आये, पर राजा को लोग पहचान नहीं पाये, इसलिए उसे पीटते हुए गालियाँ देने लगे–"बेहूदे कहीं के! कोई लोटा या तांबे का घड़ा न चुराकर मिट्टी के बर्तन चुराते हो? एक बर्तन के वास्ते इतने सारे बर्तन तुमने फोड़ डाले।"

राजा मार खाकर किसी तरह जान बचाकर राजमहल को लौट आया। दूसरे दिन दरबार में राजा ने पंडित से कहा–"पंडित जी, आपका कहना सच है कि सभी विद्याओं में चोर विद्या कठिन है।"

[२]

इस बीच शहजादा कमर का लकड़ी का घोड़ा आसमान में ऊपर उड़ गया। लग रहा था कि वह आसमान में सूरज तक चला जा रहा है। कमर ने भांप लिया कि वह खतरे में पड़ गया है। अपनी जल्दबाजी पर पछताते हुए मन ही मन सोचने लगा–"इस में कोई शक नहीं कि बूढ़े ने यह सोचकर मुझे मार डालना चाहा कि मैं उसकी शादी में बाधा डाल रहा हूँ। फिर भी उस लकड़ी के घोड़े को नीचे उतारने के लिए कोई घुंड़ी ज़रूर होगी।" यह सोचते उसने सब जगह टटोलकर देखा। जीन की बाई ओर उसे राई जैसी छोटी घुंड़ी दिखाई दी। उसे छोड़ घोड़े पर और कीई चीज़ कमर को दिखाई नहीं दी।

कमर ने उस छोटी-सी घुंड़ी को दबाया तो अचानक घोड़े का वेग कम हो गया। जल्दी ही वह ऊपर उड़ने के बदले नीचे उतरने लगा। ज़मीन के निकट आते-आते उसकी तेज़ी और कम होने लगी। आखिर घोड़ा ज़मीन पर बिना किसी प्रकार के खतरे के उतर पड़ा। शहजादा की जान में जान आ गयी।

शहजादा कमर बुरी मौत से ही नहीं बचा, बल्कि उसने घोड़े के उड़ने व उतरने की घुंड़ियों का रहस्य भी जान लिया। उसने बड़ी देर तक घोड़े को ऊपर-नीचे, आगे-पीछे चलाने का अभ्यास भी किया। तब जाकर उसने समझ लिया कि जीन के रस्सों को खींचकर घोड़े को बायीं-दायीं ओर भी दौड़ाया जा सकता है। उसे यह भी मालूम हुआ कि उस घोड़े पर समाधाण तेजी के साथ भी उड़ा जा सकता है। घोड़े को नियंत्रण में रखने के सारे

अरबी कहानी

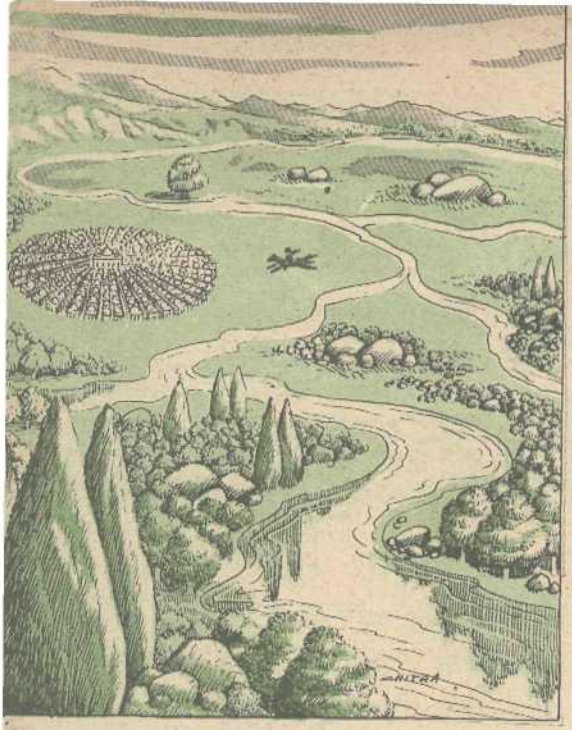

राज उसे मालूम हो गये थे, अब वह बहुत ही प्रसन्न था।

घोड़े को चलाने का तरीक़ा भली-भांति जान लेने के बाद शहजादा कमर आसमान में उचित ऊँचाई पर उड़ते नये नये देश, नगर और नये प्रदेशों को देखते आनंद उठाने लगा।

थोड़ी दूर और जाने पर उसे एक शहर दिखाई दिया। उस शहर के सारे मकान एक क्रम में बनाये गये प्रतीत हुए। शहर के चारों तरफ़ हरियाली दिल को लुभा रही थी। उस हरे-भरे कालीन जैसे मैदान से होकर कई झरने बह रहे थे। उस मैदान में हिरन छलांगें मार रहे थे।

"यह शहर कौन सा है? इसे देखना होगा।" यह सोचते कमर ने अपने घोड़े को आसमान में शहर के चारों तरफ़ चलाया। बीच-बीच में वहाँ के अनोखे नज्जारों को देखने के लिए घोड़े को रोकता भी गया।

इतने में सूरज डूब गया। उसे लगा कि वह रात उसी शहर में बितानी है। दूसरे दिन सवेरे उठकर वह अपने देश को लौट सकता है। वह मन ही मन सोचने लगा कि उसने जो कुछ देखा, उन विचित्र दृश्यों का परिचय अपने घरवालों को देना है।

कमर सोच ही रहा था कि अपने घोड़े को कहाँ पर उतारे। उसे तभी शहर के बीच एक विशाल महल दिखाई पड़ा। महल के चारों तरफ़ उसकी रक्षा के लिए बुर्ज बने हुए हैं। चालीस नीग्रो योद्धा कवच धारण कर, तलवार, भाले और धनुष-बाण लिए उस महल का पहरा दे रहे हैं।

तब तक अंधेरा फैल चुका था। मगर कमर ने तब तक छत पर रहना चाहा, जब तक कि सब लोग सो न जाय। वह भूख-प्यास से परेशान था। घर से निकलने के बाद उसने कुछ खाया-पिया न था। उसे लगा कि इतने बड़े महल में क्या उसे खाने-पीने को कुछ न मिलेगा। इसलिए वह

घोड़े को वहीं पर छोड़ खाने की खोज में सीढ़ियाँ उतर कर महल के नीचे आया।

उसने देखा कि महल के अहाते में संगमरमर पत्थरों की फ़र्श चांदनी में चमक रही है। राजमहल देखने में सुंदर लग रहा है! पर कहीं कोई आदमी दिखाई नहीं दिया। कोई आहट सुनाई नहीं दी। तब उसने सोचा, फिर छत पर जाकर घोड़े की बगल में सो जावे। दूसरे दिन सवेरे अपने घोड़े पर देश को लौट सकता है।

यह सोचते कमर छत पर चढ़ ही रहा था कि महल में उसे कहीं रोशनी दिखाई दी। उसकी आशा बंद गयी और वह रोशनी की दिशा में गया। वह मशाल की रोशनी थी, उसके पास एक नीग्रो खोजा खुर्राटे लेते सो रहा था। देखने में वह भयंकर भूत सा लग रहा था। वह अंत:पुर के दर्वाजे को रोकते लेटा हुआ था। मशाल की रोशनी में उसकी तलवार की मूठ चमक रही थी। उसके खाने की थैली शिला से बंधी लटक रही थी।

उस भयंकर योद्धा को देख कमर ने एक बार खुदा की याद की। खाने की थैली निकाल कर दूर ले गया। खाना खा कर अपनी भूख मिटा ली। जल यंत्र के पास जाकर पानी पिया। फिर उसने नीग्रो के पास आकर थैली उसी जगह लटका दी। म्यान में से तलवार बाहर निकाली।

इसके बाद कमर बड़ी सावधानी से महल के भीतर घुस पड़ा, एक दर्वाजे पर मखमल का पर्दा लटक रहा था। उस पर्दे को हटाकर कमर एक सुंदर कमरे में घुस पड़ा। उस कमरे में हाथी दांत की बनी एक चारपाई पड़ी थी। उस पर अच्छी नक्काशी की गयी थी। उसमें हीरे व जवाहरात जड़े थे। चारपाई के निकट जाकर कमर ने देखा। उस पर एक ख़ूबसूरत युवती सो रही थी। चारपाई के चारों तरफ़ चार गुलाम औरतें लेटी सो रही थीं।

खाट पर सोनेवाली युवती को देखते ही कमर अपने होश-हवाश को खो बैठा। उसने हिम्मत करके निकट जाकर उसके दायें गाल को चूम लिया।

युवती चौंककर उठ बैठी। उसने आँखें खोलकर अपने पास खड़े युवक से पूछा– "तुम कौन हो? कहाँ से आये हो?"

"मैं तुम्हारा दास हूँ। तुम्हारी ख़ूबसूरती आँखें देख मैं तुम पर मोहित हो गया हूँ।" कमर ने जवाब दिया।

"तुमको यहाँ पर किसने भेजा?" युवती ने फिर पूछा।

"अल्लाह ने भेजा है। मेरी क़िस्मत ने।" कमर ने कहा।

ये जवाब सुनकर शहजादी शम्स आल नहार ज़रा भी घबड़ाई नहीं, बोली–"क्या तुम वही राजकुमार नहीं हो जो कल मेरे साथ शादी करने की इच्छा को लेकर आया था? वह बदसूरत था, इसलिए मेरे

बाप ने उसके साथ मेरी शादी करने से इनकार किया था। तुम तो बहुत खूबसूरत हो। तुम्हें देखने पर मेरा मन तुमको चाहने लगा है।" ये शब्द कहते बिस्तर से वह उठ खड़ी हुई और उसने युवक के साथ आलिंगन किया।

उस वक़्त गुलाम औरतें जाग पड़ीं– "शहजादी जी! ये कौन हैं?" औरतों ने एक साथ पूछा।

"मेरे नींद से जागने पर यहाँ पर खड़े हैं। शायद कल मुझसे शादी करने की इच्छा लेकर आया हुआ राजकुमार हो!" राजकुमारी ने जवाब दिया।

इस पर चारों गुलाम औरतें एक साथ बोल उठीं–"छी: छी:, ये तो दूसरे हैं। ये तो कामदेव जैसे लगते हैं, कल जो आया था, वह आपके गुलाम बनने के भी क़ाबिल नहीं है।"

इसके बाद चारों औरतों ने सोनेवाले नीग्रो के पास जाकर डांटा–"हमारे सोते समय पराये पुरुष को तुमने अंत:पुर में कैसे आने दिया?"

खोजा नीग्रो झट उठ खड़ा हुआ। तलवार खींचने को हुआ, मगर म्यान में तलवार न थी। वह राजकुमारी के कमरे में आया। कमर को देख कांपते हुए पूछा–"साहब, यह बताइये कि आप आदमी हैं या शैतान?"

कमर ने क्रोध से तलवार खींचकर कहा–"अरे कमबख्त! तेरी ऐसी हिम्मत?

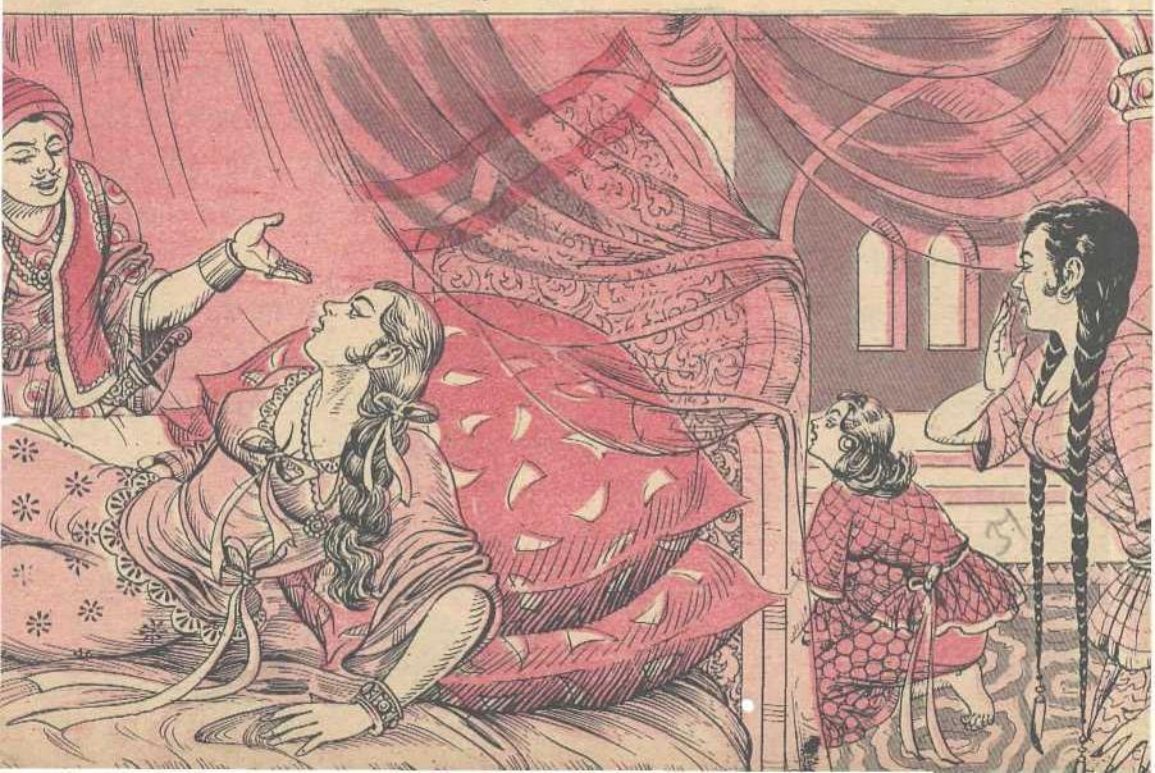

राजकुमार को देख शैतान बताते हो? मैं राजा का दामाद हूँ। राजकुमारी के साथ मैंने शादी की है। इसलिए मुझे अंतःपुर में आने का हक़ है।"

"साहब, आप तो हमारी शहजादी के क़ाबिल शौहर हैं।" यों कहते वह सुलतान के पास दौड़कर गया, बाल नोंचते, रोते बोला–"जहाँपनाह, आप जल्दी शहजादी की रक्षा कीजिये। कोई शैतान शहजादे के रूप में अतःपुर में आया है। जल्दी कीजिये।"

सुलतान को ऐसा गुस्सा आया कि नीग्रो को मार डाले, लेकिन वह अपने को संभालते हुए बोला–"अरे बदमाश! वह शैतान अन्दर जा रहा था तो तू क्या कर रहा था? तुझे मैंने रात-दिन अंतःपुर का पहरा देने के लिए क्यों तैनात किया?" इसके बाद सुलतान बावले की तरह बेतहाशा शहजादी के सोने के कमरे की ओर दौड़ गया।

गुलाम औरतें दर्वाज़े के पास डर के मारे काँपते दिखाई दीं। सुलतान ने उन लोगों से पूछा–"शहजादी का क्या हाल है?"

"मालिक! हमारे सोते समय क्या हुआ, हम नहीं जानतीं। हमारे जागते ही एक खूबसूरत जवान शहजादी से बात करते दिखाई दिया। इतने खूबसूरत जवान को हमने आज तक कहीं नहीं देखा। हमारे पूछने पर उन्होंने जवाब दिया कि आपने शहजादी के साथ उनकी शादी की है। बस, हम और कुछ नहीं जानतीं। चाहे वे जो भी हो, भले आदमी हैं, सज्जन हैं।"

ये बातें सुनकर सुलतान की घबराहट थोड़ी शांत हुई। उसने पर्दा उठाकर भीतर झाँका। अपनी बेटी से बात करनेवाला कमर उसे दिखाई पड़ा।

अपनी बेटी के शील की बात याद आते ही सुलतान को बड़ा गुस्सा आया। वह तलवार खींचकर आगे बढ़ा। शहजादी

से पूछकर कमर ने जान लिया कि वही सुलतान है, तब वह भी तलवार खींचकर गरज उठा। सुलतान एकदम सहम गया। कमर ने जोश में आकर उस पर तलवार चलानी चाही। सुलतान ने अपनी कमजोरी का ख्याल करके तलवार म्यान में रख दी और पूछा–"सुनो, तुम आदमी हो या शैतान?"

"इस पर कमर ने आवेश में आकर कहा–"आपको मैंने अपने बराबर के मान कर आप की बेटी को शीलवती मानते हुए आप की रक्षा की। वरना फ़ारस का यह शहजादा यह अपमान सहन नहीं कर सकता और आपको, आपके राज्य को अब तक मिट्टी में मिला दिया होता, समझें!"

ये बातें सुनने पर सुलतान को डर भी लगा और कमर के प्रति आदर का भाव भी पैदा हो गया। फिर उसने हिम्मत करके कमर से पूछा–"तुम सचमुच शहजादा हो तो बिना बुलावे के राजमहल में कैसे पहुँच सके? मेरी बेटी को अपने वश में लाकर तुमने मेरे वंश में कलंक क्यों लगाया? अनेक राजकुमारों ने मेरी बेटी के साथ शादी करने की इच्छा प्रकट की। मगर मैंने इनकार कर दिया। ऐसी हालत में तुमने यह कैसे झूठ कहा कि मैंने अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ की है? मगर

मैं अपने गुलामों के जरिये तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े करवा दूं तो तुम को इस वक़्त रोकनेवाले कौन है?"

"आप की मोटी अक्ल देखने पर मुझे अचरज होता है। तुम्हारी बेटी को मुझसे भी क़ाबिल खाविंद कौन मिलेगा? मुझसे भी ज़्यादा हिम्मतवर और धनी को क्या तुमने कभी देखा भी है?"

"हो सकता है कि तुम्हारी बातों में सचाई हो! मगर तुम मेरी बेटी के साथ शादी करना चाहता हो। वह काजी की मदद से गवाहियों के सामने होनी चाहिये। हमारे रस्मो-रिवाज़ के मुताबिक़ शादी होनी चाहिए, ऐसा न होकर गुप्त रूप से

शादी होने से मेरी इज्ज़त धूल में मिल जायगी।" सुलतान ने समझाया।

"अच्छी बात कही, मगर अब आप अपने सिपाहियों को बुला भेजें तो आप की और आपके राज्य की इज्ज़त क्या मिट्टी में नहीं मिल जायगी? इसलिए इस मामले में मेरे कहे मुताबिक़ किये बिना दूसरा कोई चारा नहीं है?" कमर ने जवाब दिया।

"कहो तो मैं भी सुनूं!" सुलतान ने पूछा।

"आप के सामने दो ही रास्ते हैं। एक तो मेरे साथ लड़ने का, मगर आप उस में हार जाये तो आप को अपना राज्य मुझे देना होगा। ऐसा नहीं तो आज रात को मुझे शहजादी के साथ बिताने दीजिये। सवेरा होते ही आप अपनी सारी फौज़ को मुझ से लड़ने भेज दीजिये। हाँ, आपकी कितनी फौज़ है?" कमर ने सुलतान से पूछा।

"मेरी फौज़ चालीस हज़ार की है। इसके अलावा मेरे गुलाम और गुलामों के गुलामों को मिलाकर और चालीस हज़ार लोग हैं। अस्सी हज़ार सिपाहियों के साथ युद्ध करने के लिए तुम्हारे पास फौज़ ही कहाँ पर है? तुम हमारी फौज़ की जानकारी पाकर क्या कर सकोगे?" सुलतान ने कहा।

"अच्छी बात है। सवेरा होने के पहले सब को सैनिक-व्यूह में खड़ा कर दीजिये और उनसे कहिये कि मैं शहजादी के साथ शादी करना चाहता हूँ। इस के लिए मैं अकेले उन सब के साथ युद्ध करना चाहता हूँ। मगर वे मुझे मार डालेंगे तो आप का रहस्य मेरे साथ खतम हो जायगा। यदि मैं उन सब को मार कर जीत सका तो आपको यह ख्याति मिलेगी कि आप का दामाद असाधारण पराक्रमी है।" कमर ने कहा।

सुलतान की समझ में न आया कि इस युवक के दुस्साहस का रहस्य क्या है? फिर भी उस ने इन शर्तों को मान लिया।

(और है)

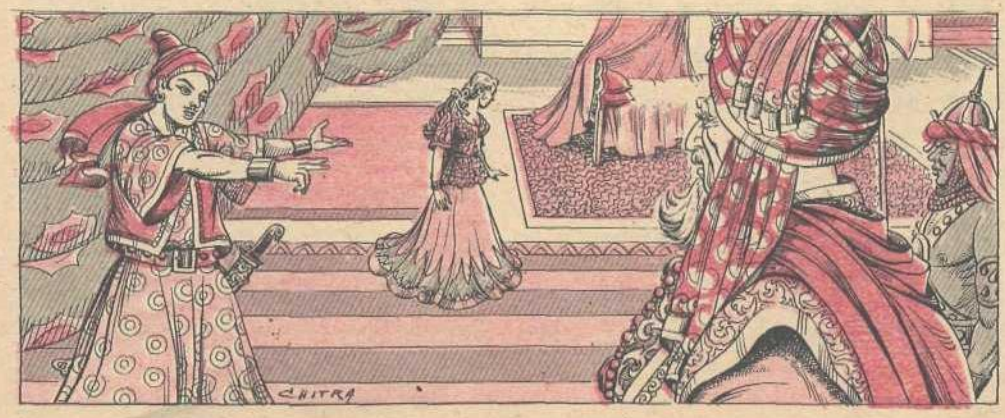

उचित पुरस्कार

एक जमीन्दार अपने दीवाने आम में बैठे कोई कागज़ात देख रहे थे, तब एक कवि ने उपस्थित होकर मुखस्तुति की कविता सुनायी–"आप इन्द्र के समान हैं, प्रतापी हैं..."

अपनी प्रशंसा पसंद न करनेवाले जमीन्दार ने कवि की तारीफ़ करते खजांची को बुलाया और कहा–"इस कवि महाशय को सौ रुपये दिला दो।"

इस पर कवि फूला नहीं समाया, उसने जमीन्दार को कुबेर और दानकर्ण बताते एक कविता और सुनायी।

"इनको सौ नहीं, हज़ार देकर भेज दो।" जमीन्दार ने कहा। कवि महाशय की प्रसन्नता की सीमा न रही।

खजांची ने कवि को बाहर बिठाया और जमींन्दार के पास लौटकर पूछा–"कविजी को क्या देना है?"

"जो देना था, मैंने दे दिया। तुम्हें कुछ देने की ज़रूरत नहीं। वे तो झूठी तारीफ़ करके मुझे खुश करना चाहते हैं, मैंने भी उन्हें मीठी बातों से खुश कर दिया। बस, अब देना क्या है?" जमीन्दार ने जवाब दिया।

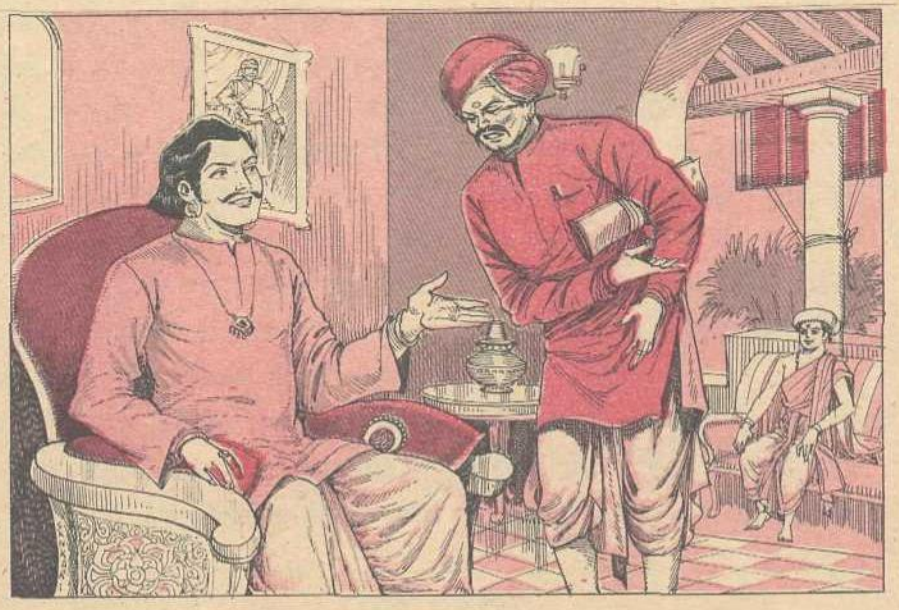

जीत किस की ?

मगध राजा के दो पत्नियाँ थीं। दोनों ने एक ही दिन एक ही क्षण में एक-एक पुत्र का जन्म दिया। एक लड़के का अमरसिंह और दूसरे का जयसिंह नामकरण किया गया।

दोनों लड़के रूप और ताक़त में एक दूसरे से कम न थे। सभी विद्याओं में दोनों समान निकले। युद्ध-विद्याओं में एक दूसरे की समता रखते थे।

मगर उन दोनों में एक अंतर था। अमरसिंह जहाँ घुड़-सवारी और खड्ग युद्ध में निपुण था, वहाँ जयसिंह हाथी की सवारी और मल्ल युद्ध में। दोनों राजकुमारों के बीच अत्यंत स्नेहभाव था।

राजा वृद्ध हो चुके थे। उसके मन में यही चिंता खाये जा रही थी कि दोनों में से किसको गद्दी दी जाय! दोनों राजकुमारों का एक ही दिन जन्म हुआ है। इसलिए छोटे-बड़े का सवाल ही नहीं उठता था। राज्य के भी दो टुकड़े नहीं किये जा सकते थे। इसलिए उन दोनों की योग्यताओं की जांच करके उन में जो अधिक योग्य हो, उसी को शासन का भार सौंपना है। राजा तथा मंत्री ने कई दिन तक विचार करके यह निर्णय किया। मगर उन के लिए यह निर्णय करना संभव न हो सका, कि इन दोनों राजकुमारों में कौन अधिक योग्य है।

राजकुमार बिलकुल यह नहीं जानते थे कि राजगद्दी के वारिस के बारे में राजा और मंत्री विचार कर रहे हैं।

उन्हीं दिनों में कौशिक देश की राजकुमारी के स्वयंवर का प्रबंध किया गया था। उस में यह घोषणा की गयी थी कि स्वयंवर के समय विविध प्रकार की विद्याओं की प्रतियोगिताएँ चलायी जायेंगी

देवेन्द्रनाथ वर्मा

और जो उन सब में सफल निकलेगा उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जायगा।

यह समाचार सुनने पर राजा और मन्त्री ने दोनों राजकुमारों को स्वयंवर में भेजने का निश्चय किया। उनका विश्वास था कि वहीं पर उन दोनों की योग्यताओं का अंतर प्रकट हो जायगा। अपने पिता के आदेश पर अमरसिंह और जयसिंह दोनों कौशिक राजकुमारी के स्वयंवर में भाग लेने चले गये।

स्वयंवर में अनेक देशों के राजकुमार आये थे। अमरसिंह और जयसिंह ने उन सबके साथ अलग-अलग स्पर्धा की और उन सब को हरा कर दोनों ने समान विजय प्राप्त की। अंत में जब उन दोनों के बीच स्पर्धा हुई, तब घोड़े की सवारी और खड्ग-युद्ध में अमरसिंह विजयी निकला, किंतु मल्ल युद्ध और हाथी की सवारी में जयसिंह सफल निकला। इस प्रकार भी दोनों की विजयों की संख्या समान थी।

कौशिक राजा यह निर्णय नहीं कर पाया कि उन दोनों युवकों में से किसके साथ अपनी पुत्री का विवाह करे। उसने अपने निर्णय की घोषणा करने के लिए तीन दिन की अवधि रखी और सब राजकुमारों को अपने निवासों में भेज दिया। इसके बाद कौशिक ने अपने मंत्रियों से परामर्श करके एक ढिंढोरा पिटवा दिया।

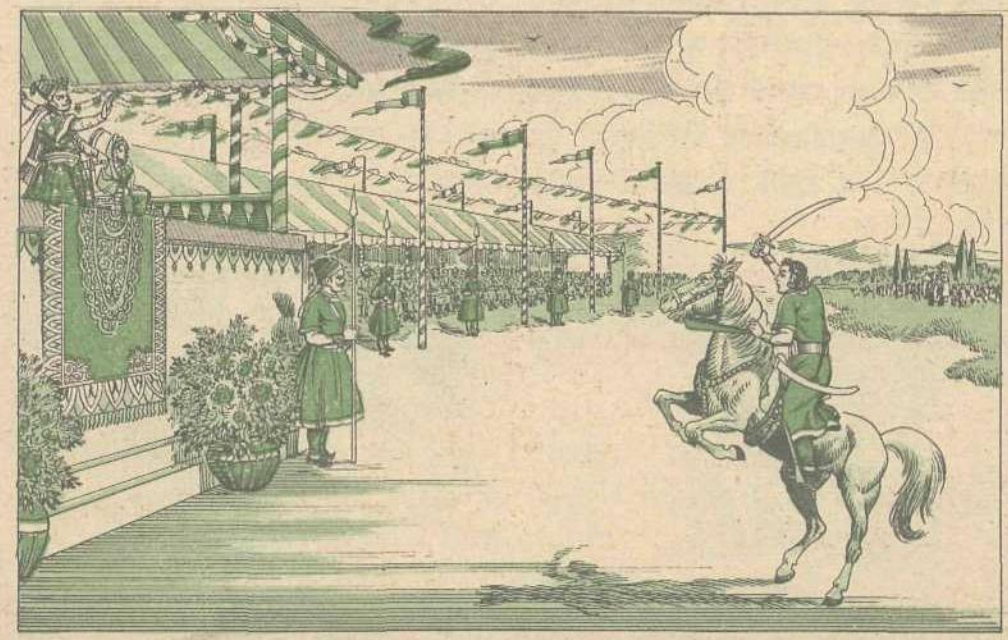

जो युवक यह बता देगा कि अमरसिंह और जयसिंह में कौन अधिक योग्य है, उसके साथ अपनी दूसरी पुत्री का विवाह करके उसे आधा राज्य दिया जायगा।

इस घोषणा के दूसरे दिन एक मुनि एक शिष्य को साथ लेकर दरबार में आया और बोला–"राजन, आप की पुत्री के विवाह को लेकर ओ समस्या उत्पन्न हो गयी है, उसे मेरा शिष्य हल करेगा।

राजा ने पूछा–"वह हल कैसा है?"

इस पर मुनि के शिष्य ने राजा से यों कहा–"राजन, अमरसिंह खड्गयुद्ध और घोड़े की सवारी में जयसिंह से अधिक योग्यता रखता है, मगर हाथी की सवारी और मल्लयुद्ध में कम। लेकिन क्या हाथी पर रहनेवाले खड्गविहीन वीर की अपेक्षा घोड़े पर सवार खड्गवाले वीर कहीं अधिक नहीं है? अलावा इसके घोड़ा हाथी पर उछल कर जा सकता है, जब कि हाथी घोड़े पर रहकर खड्ग रखनेवाले वीर को किसी भी हालत में मार नहीं सकता, मगर हाथी पर रहनेवाले मल्ल को खड्गधारण करनेवाला अश्वारोही आसानी से मार सकता है। इसलिए जयसिंह की अपेक्षा अमरसिंह ही अधिक योग्य है!"

इस तर्क को सब लोगों ने स्वीकार किया। राजा भी यह सोचकर तृप्त हुआ कि उसकी समस्या हल हो गयी है।

तुरंत मुनि तथा उसके शिष्य अपने वेष हटाकर असली रूप में प्रत्यक्ष हुए। मुनि का वेष अमरसिंह तथा शिष्य का वेष जयसिंह ने धारण किया था।

कौशिक राजा ने अपनी दो कन्याओं का विवाह दोनों राजकुमारों के साथ संपन्न करके जयसिंह को आधा राज्य सौंप दिया।

इसके साथ मगध देश की समस्या भी हल हो गयी। अतः मगध राजा ने अमरसिंह का राज्याभिषेक किया।

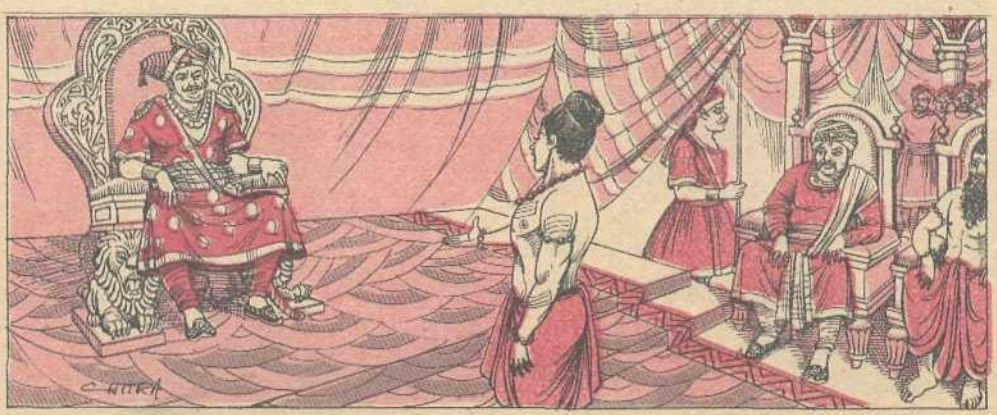

इज्जत की वजह!

एक गाँव में अकाल के लक्षण दिखाई दिये, इसलिए उस गाँव का एक व्यापारी सस्ते में अनाज बेचे जानेवाले एक दूर देश के लिए रवाना हुआ। उसके साथ एक अछूत चमड़े खरीदने के लिए हो लिया।

रास्ते में एक मुनि ने दोनों की मेहमानदारी की और व्यापारी के साथ अधिक आदर दिखाया। जब वे अपने लिए आवश्यक अनाज और चमड़े खरीदकर अपने गाँव लौटने लगे तब मुनि ने दोनों का आतिथ्य तो किया, पर इस बार अछूत के प्रति अधिक आदरभाव दिखाया।

दोनों ने मुनि से पूछा कि इसकी वजह क्या है?

मुनि ने बताया–"हे व्यापारी, तुमने जाते समय अपने मन में सोचा कि जिस देश में जाते हो, वहाँ पर फ़सल खूब पैदा होकर भरपूर अनाज हो। मगर अछूत ने सोचा कि वहाँ पर अकाल के कारण ज्यादा से ज्यादा गाय, बैल व भैंस मरे हुए हो। इसलिए जाते समय मैंने तुम्हारा अधिक आदर किया।

लेकिन लौटती बार तुमने सोचा कि तुम्हारे गाँव में अकाल पड़ा हो और अनाज का भाव तेज हो, जब कि अछूत ने सोचा कि लोग खुशहाल हो, सबके पास पर्याप्त धन हो! इसलिए मैंने इस बार अछूत का अधिक आदर किया।"

पुनर्जन्म

महाराजा उग्रगुप्त के दो पुत्र थे। उन दोनों की प्रवृत्तियाँ परस्पर विरुद्ध थीं। बड़ा पुत्र युवराज शंकरगुप्त था जो धूर्त, क्रूर और कठिन स्वभाव का था। वह दिन भर शराब के नशे में लोटता रहता था। छोटा पुत्र शेखरगुप्त सरल और दयालु था। वह सदा धार्मिक चिंता में निमग्न रहता था।

शंकरगुप्त को कोई चाहता न था, मगर वह राजा का ज्येष्ट पुत्र था, इस कारण से वही राजगद्दी का वारिस था। दरबार में मुख्य मंत्री से लेकर हर कोई छोटे राजकुमार शेखरगुप्त को चाहता था। क्यों कि वह शांत स्वभाव का था।

इस कारण शंकरगुप्त अपने छोटे भाई शेखरगुप्त से ईर्ष्या और द्वेष करता था। उसने शेखरगुप्त का अंत करने का मन में निश्चय कर लिया।

महाराजा उग्रगुप्त शंकरगुप्त से बिशेष स्नेह रखता था। उसकी क्रूरता को महाराजा उसका पराक्रम मानता था। दयालु स्वभाव का शेखरगुप्त महाराजा की दृष्टि में पराक्रम हीन प्रतीत होता था।

ईर्ष्या से जलनेवाले शंकरगुप्त ने एक दिन अपने छोटे भाई का वध करने की योजना बनायी। उसने शेखरगुप्त को शिकार के लिए नियंत्रण दिया। दोनों घोड़ों पर जंगल की ओर चल पड़े। जब वे घने जंगल से होकर गुजरने लगे तब शंकरगुप्त ने शेखरगुप्त पर अपनी तलवार का वार किया।

अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए शेखरगुप्त किसी पेड़ से लटकनेवाली लता को पकड़कर घोड़े पर से ऊपर उठा। उसका घोड़ा पीछे की ओर चला और शंकरगुप्त के घोड़े से जा ठकराया। इस

ए. सी. सर्कार, जादूगर

पर शंकरगुप्त का घोड़ा पिछली टांगों से ऊपर उठा। इससे शेखरगुप्त ने घोड़े पर से अपने पैर उठाये तब उसकी तलवार म्यान से निकल गयी और उसकी मूठ कीचड़ में जा धंसी। तलवार की नोक ऊपर की ओर खड़ी रह गयी। शंकरगुप्त का घोड़ा अपनी पिछली टांगों के बल पर उठने की बजह से वह सीधे उस तलवार पर जा गिरा। तलवार शंकरगुप्त की बगल में घुस गयी। शंकरगुप्त ने दम तोड़ दिया।

इतने में शंकरगुप्त का दल वहाँ पर आ पहुंचा। उन लोगों ने देखा कि शंकरगुप्त की बगल में शेखरगुप्त की तलवार घुसी हुई है और शेखर वहीं खड़ा हुआ है।

शेखरगुप्त पर शंकरगुप्त की हत्या का अपराध लगाया गया। उसे निर्दोष साबित करने के लिए कोई सबूत न थे। उसने सच्ची बात न्यायाधीश से बतायी। मगर न्यायाधीश को उसकी कैफ़ियत एक कल्पित कथा-सी मालूम हुई। इसलिए उसने शेखरगुप्त को मृत्युदण्ड सुनाया।

अगले शुक्रवार की दुपहर को दस धनुर्धारियों के द्वारा एक साथ उस पर बाण चलाकर मारने का निर्णय हुआ।

उस देश की शिक्षा-स्मृति बड़ी विचित्र थी। उसके अनुसार निर्णीत समय पर सेनापति एक लाल रूमाल को नीचे गिरा

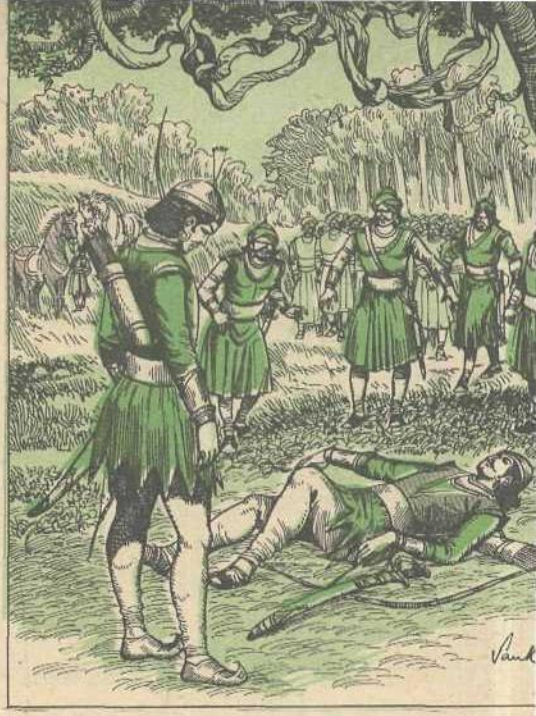

देगा। उसके नीचे गिरते ही धनुर्धारी बाण चलायेंगे। यदि किसी कारणवश उस क्षण में दण्ड अमल किया नहीं गया तो वह दण्ड रद्द हो जाता है।

सेतापति को इस बात का बड़ा दुख था कि शेखरगुप्त का मृत्युदण्ड उसे स्वयं अमल करना पड़ रहा है। वह शेखरगुप्त से अत्यंत वात्सल्य भाव रखता था। अगले शुक्रवार की दुपहर को अपने बायें हाथ से लाल जेब रूमाल नीचे गिराकर धनुर्धारियों को शेखरगुप्त पर बाण चलाने का संकेत करना उनके द्वारा असंभव है। वह अन्न-जल त्याग कर इस समस्या पर सोचता रहा।

अंत में सेनापति को अचानक उस देश की शिक्षा-स्मृति का छूट उसे स्मरण आया। खासकर राजपरिवार से संबंधित विषय में निर्णीत समय पर दण्ड को अमल नहीं किया गया तो वह रद्द हो जाता है।

मगर उस समय को टाले कैसे? सेनापति जो दण्डाधिकारी भी था, उसे स्मरण आया कि दरबारी जादूगर इंद्रनाथ इस संकट से उसे बचा सकता है। वह इंद्रनाथ से मिला और अपनी व्यथा सुनायी।

इंद्रनाथ ने एक लाल जेब रूमाल को हाथ में लिया। उसके सिरे से बित्ते भर लंबा एक रबर का दागा सूई और दागे से सी दिया, उसके दूसरे सिरे को दण्डाधिकारी के बायीं तरफ़ के बगल के पास सी दिया। साधारणत: वह जेब रूमाल दण्डाधिकारी के कुर्ते के बाये हाथ के भीतर रहेगा जो बाहर से दिखाई न देगा। उसे खींचकर हाथ में लेने पर रबर का धागा फैल जायगा, मगर जेब रूमाल को गिराते ही वह कुर्ते के हाथ में घुस कर गायब हो जायगा।

शुक्रवार का दिन आया। दण्डाधिकारी दुपहर के समय लाल जेब रूमाल को अपने बाये हाथ की उँगलियों से पकड़े खड़ा रह गया। शेखरगुप्त को एक स्तम्भ से बांध दिया गया। उसके सामने दस धनुर्धारी धनुष्यों पर बाण चड़ाये तैयार खड़े थे। वे दण्डाधिकारी के जेब-रूमाल की ओर ताक रहे थे। सूरज ठीक सर पर आ पहुँचा। दण्डाधिकारी ने अपने हाथ के रूमाल को नीचे गिराया। मगर वह विचित्र ढंग से गायब हो गया। धनुर्धारी विस्मय में आ गये। देखनेवाले लोग भी अचरज में आकर ताकते रह गये।

इस बीच दण्ड का मुहूर्त बीत गया। शेखरगुप्त का मृत्युदण्ड रद्द हो गया। भीड़ चिल्ला उठी–"युवराज शेखरगुप्त की जय।" राजा यह सोचकर आनंद से भर उठा कि किन्हीं देवताओं ने उसके पुत्र को बचाया है। उसने शेखरगुप्त के साथ आलिंगन किया। दण्डाधिकारी तथा इंद्रनाथ एक दूसरे को देख मुस्करा उठे।

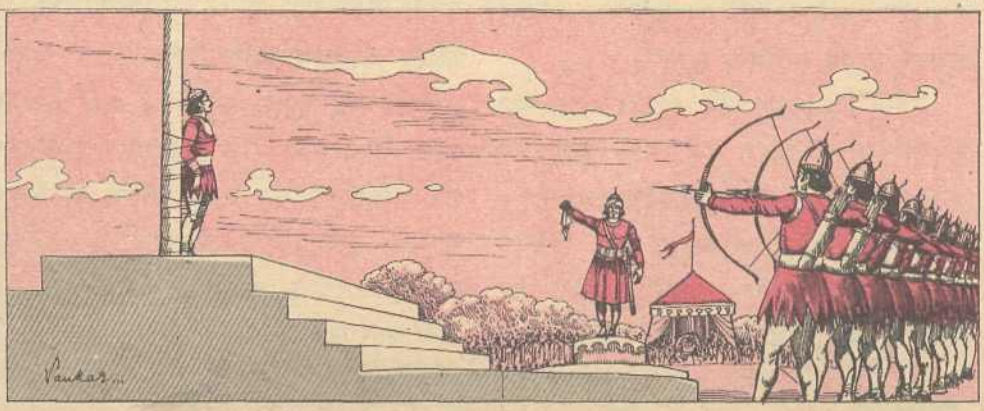

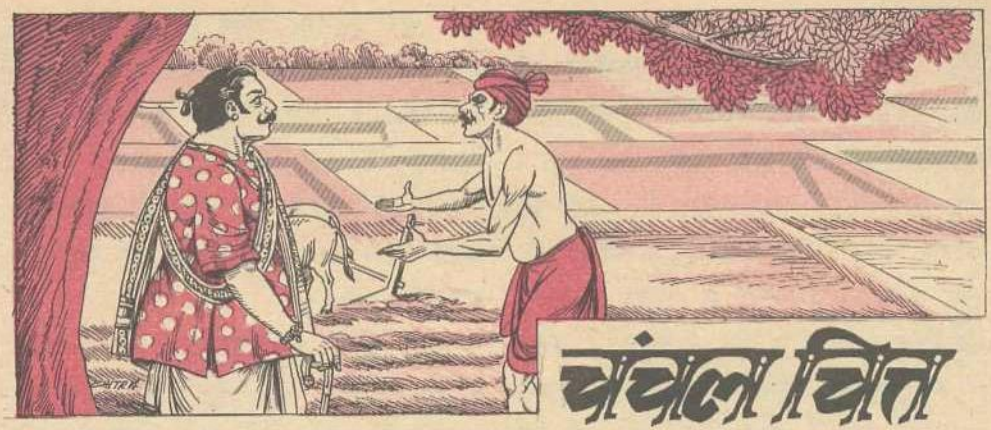

चंचल चित्त

एक किसान अपने खेत में जाकर हल जोत रहा था, तब हल का फाल किसी चीज़ से टकराया। किसान ने उस जगह खोद कर देखा तो उसे एक कांसे का बर्तन दिखाई दिया। बर्तन में सोना भरा हुआ था।

बर्तन भर सोना देखते ही किसान का चित्त चंचल हो उठा। वह सोचने लगा– सोने से बड़े बड़े काम किये सकते हैं। बड़ा आदमी बन सकता है। मगर साथ ही उससे खतरा भी है। चोरों को मालूम हो जाय तो लूट ले जायेंगे, सामना करने पर मार भी डालेंगे।

ऐसे परस्पर विरोधी विचारों से किसान परेशान था। तभी दूर पर एक न्यायाधिकारी उसे दिखाई पड़ा। किसान ने सोचा कि यह सारा सोना न्यायाधिकारी के हाथ दे तो उसे किसी प्रकार का खतरा न होगा। यह सोचकर वह किसान न्यायाधिकारी के पास दौड़ कर गया और बोला–"आप कृपया एक बार मेरे खेत में आने का कष्ट कीजिये।"

दोनों उस जगह पहुँचे, जहाँ कि कांसे का बर्तन जमीन में था। इतने में किसान का मन बदल गया। उसने उस बर्तन पर मिट्टी डाल दी और न्यायाधिकारी से कहा–"महाशय, आप निर्णय करने में बड़े ही कुशल हैं। कृपया बताइये कि मेरे दोनों बैलों में से कौन सा बैल श्रेष्ठ है?"

यह सवाल सुनकर न्यायाधिकारी खीझ उठा और अपने रास्ते चला गया।

"मैंने यह सोना न्यायाधिकारी के हाथ क्यों नहीं दिया। इसे मैं सब की आँख बचा कर कहाँ छिपा सकता हूँ?" किसान यह सोच मन ही मन और डरने लगा।

दिन भर वह यही सोचता रह गया। खेत का काम थोड़ा-सा भी न हुआ।

विमला गार्गव

सूरज डूबने को था। तब न्यायाधिकारी गाँव लौटते दिखाई दिया। किसान की जान में जान आ गयी। वह फिर न्यायाधिकारी के पास दौड़ कर गया। एक बार और अपने खेत में आने की मिन्नत की। न्यायाधिकारी ने सोचा कि कोई अनहोनी हो गयी है। यह सोचकर वह किसान के साथ खेत में पहुँचा। इतने में किसान का मन बदल गया। उसने न्यायाधिकारी से कहा–"यह बताइये कि मैंने कल जो खेत जोता था, वह अच्छा है या आज जोता गया अच्छा है?"

न्यायाधिकारी यह सवाल सुनकर यह सोचते अपने रास्ते चला गया कि किसान का दिमाग खराब है। न्यायाधिकारी के चले जाने पर किसान फिर सोचने लगा कि मैंने यह सारा सोना उसके हाथ में क्यों नहीं दिया? इसे मैं कहाँ छिपाऊँ? कैसे छिपाऊँ?" वह चिंतित हो उठा।

आखिर उसने एक बोरे में सोनेवाला बर्तन डाल दिया और पीठ पर लाद कर घर चला गया।

घर पहुँचते ही किसान ने अपनी पत्नी से कहा–"सुनो तो, बैलों को बांध कर दाना-पानी दो। मुझे जल्दी न्यायाधिकारी के घर हो आना है।"

अपने पति को पीठ पर से बोरे को न उतारते देख, किसान की पत्नी ने सोचा कि इस में कोई रहस्य है। उसने इस रहस्य को जानने का मन में निश्चय कर लिया।

उसने किसान से कहा–"मेरा काम यह थोड़े ही है? तुम ही बैलों को बांध दो, मैं गाय और भेड़ों को संभालती हूँ। इसके बाद चाहे तुम जहाँ भी चले जाओ और जब मन होगा तब लौट आओ।"

किसान ने लाचार होकर बोरा नीचे रख दिया और बैलों को बांधने चला। इस बीच किसान की पत्नी ने बोरे में से कांसे का बर्तन बाहर निकाला। वह सोना से भरा था। किसान तब तक बैलों को बांध कर उन्हें चारा-पानी देकर लौटा। तब तक उसकी पत्नी ने उस बर्तन को कहीं छिपा दिया और उसी आकार का एक भारी पत्थर बोरे में रख दिया।

किसान अपना काम करके लौटा। बोरे को पीठ पर लाद कर सीधे न्यायाधिकारी के घर पहुँचा।

"साहब! मैं आप के लिए एक पुरस्कार लाया हूँ।" किसान ने कहा।

न्यायाधिकारी ने सोचा कि पुरस्कार बड़ा क़ीमती होगा। यह सोचकर बोरा खोल कर देखा तो उस में एक पत्थर दिखाई दिया। इस पर न्यायाधिकारी के साथ किसान भी आश्चर्य में आ गया।

न्यायाधिकारी ने सोचा कि किसान के इस व्यवहार का कोई प्रबल कारण होगा। उसने किसान को एक कोठी में बंद कराया। उसने अपने दो नौकरों को आदेश दिया कि रात को किसान क्या क्या बड़बड़ाता

है और क्या क्या करता है, इस पर निगरानी रखे।

किसान कोठी में बैठे मन ही मन बड़बड़ाते अपने हाथों से अभिनय करते कह रहा था–"ओह, इतना बड़ा बर्तन, इतना ऊँचा! उस में इतना सोना।"

नौकरों ने न्यायाधिकारी को किसान के अभिनय का परिचय दिया। किसान को बुलवाकर न्यायाधिकारी ने उस से पूछा–"भाई, देखो, तुम रात को अपने हाथों से कुछ माप रहे थे! वह क्या है?"

इतने में किसान ने हिम्मत बटोर ली। उसने न्यायाधिकारी से कहा–"साहब, मैं आप ही की माप माप रहा था। साहब, यह कह रहा था कि आपका सर इतना मोटा है, आपकी गर्दन इतनी मोटी है। आपका पेट इतना ऊँचा है।"

न्यायाधिकारी को किसान की बातों पर बड़ा क्रोध आया। उसने अपने सेवकों को आदेश दिया–"इस बेहूदे को तुरंत फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दो।"

नौकर किसान को ले गये। फाँसी के खम्भे का प्रबंध किया। उस पर रस्सा लगाया और गले में फाँसी का फँदा डालने ही वाले थे, तब किसान ने कहा–"ठहर जाओ, न्यायाधिकारी से मुझे एक निवेदन करना है।"

नौकरों ने किसान को न्यायाधिकारी के पास ले जाकर उसकी अंतिम इच्छा बतायी।

"तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो?" न्यायाधिकारी ने किसान से पूछा।

"देखो साहब, आपके नौकर मेरे गले में फाँसी का फँदा डालते तो कसकर मेरी साँस नहीं चलती, बंद हो जाती।" किसान ने कहा।

किसान की बात सुनकर न्यायाधिकारी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया और बोला–"इस कमबख्त को छोड़ दो।"

फिर क्या था, किसान अपने घर गया। उस सोने की वजह से पत्नी के साथ आराम से अपने दिन काटने लगा।

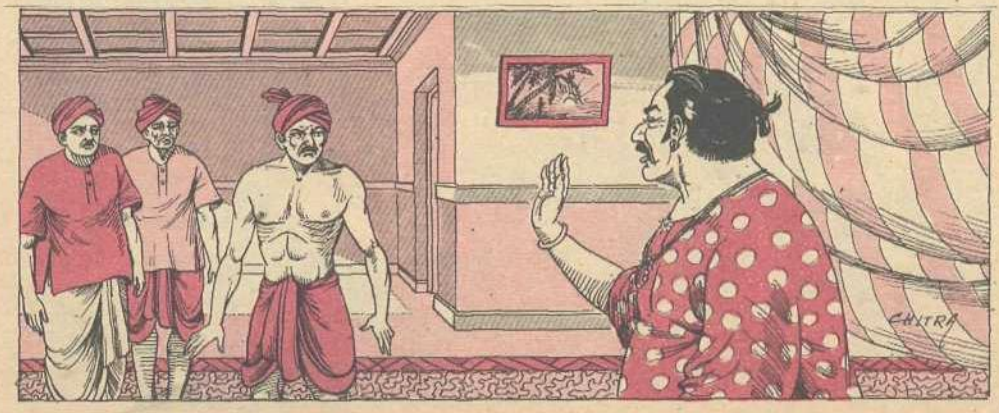

धृतराष्ट्र ने भी दुर्योधन को चेतावनी दी कि युद्ध खतरे से खाली नहीं है। पर दुर्योधन ने किसी की बात की परवाह नहीं की। सभा में उपस्थित राजाओं ने निश्चय कर लिया कि अब युद्ध अनिवार्य है, और वे सब उठ कर चले गये।

धृतराष्ट्र ने गुप्त रूप से संजय को बुलाकर पूछा–"संजय, तुम पांडव और कौरवों के बल से भली भांति परिचित हो। यह सविस्तार सुनाओ कि पांडवों के पक्ष में युद्ध करने में कौन उत्साह दिखा रहे हैं? उन में बलवान कौन हैं?"

इसपर संजय ने उत्तर दिया–"राजन, मैं आप से एकांत में कुछ नहीं कहूँगा। मैं जो बात बताऊँगा, उसे सुनकर आप ईर्ष्या करेंगे! इसलिए आप व्यास और गांधारी को भी यहाँ बुलवाइये, मैं सब के समक्ष सारी बातें सच्ची सच्ची बताऊँगा।"

जल्द व्यास और गांधारी वहाँ पर आ पहुँचे। तब संजय ने धृतराष्ट्र से कहा–"राजन, कृष्ण और अर्जुन अवतार पुरुष हैं। महान वीर हैं। तीनों लोक एक होकर भी कृष्ण की ओर देखने की हिम्मत नहीं कर सकते। ऐसे कृष्ण ने आपके पुत्रों का निर्मूल करने का निश्चय कर लिया है। वे प्रकट रूप में साधारण मानव हैं।"

"यह रहस्य तुम कैसे जान गये? मुझे क्यों मालूम नहीं हुआ?" धृतराष्ट्र ने पूछा।

"राजन, आप विद्याविहीन हैं, आपका स्वभाव तामस से भरा हुआ है। मैंने

विद्या के द्वारा ही कृष्ण की महिमा को जान लिया है।" संजय ने उत्तर दिया।

इस पर व्यास ने धृतराष्ट्र से कहा– "कृष्ण तुम को बहुत चाहता है, यह संजय कृष्ण के बारे में पूर्ण ज्ञान रखता है। इसलिए तुम इसके कहे अनुसार करोगे तो तुम्हारा हित होगा।"

उधर उपप्लाव्य में युधिष्ठिर ने कृष्ण से कहा–"कृष्ण, यही समय है, जब हमारे मित्र हमारी सहायता करे। इस समय हमारा उपकार और हमारी रक्षा कर सकनेवाले आप एक ही दिखाई देते हैं। आप पर भरोसा रखकर ही हम ने कौरवों का नाश करने का संकल्प किया है। इसलिए हमारी रक्षा का भार आप पर ही है।"

"युधिष्ठिर, तुम जो कहना चाहते हो, उसे निस्संकोच बताओ, उसे करने का दायित्व मेरा है।" कृष्ण ने कहा।

इस पर युधिष्ठिर ने यों कहा–"आप ने संजय के मुँह से सारी बातें सुन ली हैं। धृतराष्ट्र ने जो कुछ हम से कहने को कहा, वे ही बातें संजय ने बतायी हैं। वे वृद्ध लोभी हमें अपना राज्य दिये बिना हमसे शांति चाहते हैं। धृतराष्ट्र की सच्चाई पर विश्वास करके हमने भयंकर वनवास किया है। मगर वे दुर्योधन की इच्छा के विरुद्ध चलनेवाले नहीं हैं। मैं अपनी माता तथा हितैषियों को किसी प्रकार का सुख न दे सका। मैंने यहाँ तक बताया कि कम से कम हम पांचों को पांच गाँव देंगे तो हम युद्ध करना त्याग देंगे। धृतराष्ट्र इस के लिए भी तैयार नहीं हैं। दरिद्रता से मृत्यु अच्छी है। हम क्षत्रिय होकर उस धर्म को छोड़ अन्य धर्मों का अवलंबन नहीं कर सकते। इसलिए हम शांति के पथ पर ही चलना चाहते हैं। यह संभव न हुआ तो युद्ध है ही। इसलिए आप बताइये कि इस समय हमारा कर्तव्य क्या है?"

इस पर कृष्ण ने समझाया–"राजन, मेरी दृष्टि में तुम लोग और कौरव भी

बराबर हैं। मैं तुम दोनों पक्षों के हित की कामना को लेकर कौरवों के पास जाऊँगा। आपके आशयों के अनुकूल कौरवों के मन में भी शांति पैदा कर सका तो मुझे बड़ा पुण्य होगा। मैं अनेक लोगों को मृत्यु से बचानेवाला साबित होऊँगा।"

युधिष्ठिर ने कृष्ण की बातों का समर्थन किये बिना कहा–"दुष्ट दुर्योधन आपकी बात नहीं मानेगा। उसका समर्थन करने वाले सभी राजाओं की यही प्रवृत्ति है। ऐसे लोगों के बीच आपका जाना मुझे कदापि पसंद नहीं है। आपको ज़रा भी कष्ट होगा तो मैं सहन नहीं कर सकता।"

इसके उत्तर में कृष्ण ने कहा–"युधिष्ठिर, मैं दुर्योधन का स्वभाव अच्छी तरह से जानता हूँ। वहाँ के लोग मुझे छेड़ने की हिम्मत करेंगे, तो मैं सब को भस्मीभूत कर डालूँगा। यदि हम शांति का प्रयत्न नहीं करेंगे, जनता की दृष्टि में गिर जायेंगे। इसलिए मेरा वहाँ पर जाना आत्यावश्यक है।"

"मैं आपके विरुद्ध कुछ कहने की सामर्थ्य नहीं रखता। आप कुशलपूर्वक वहाँ जाइये, हमारे कार्य को सफल बनाकर शांति लाभ करके लौट आइये।" युधिष्ठिर ने कहा।

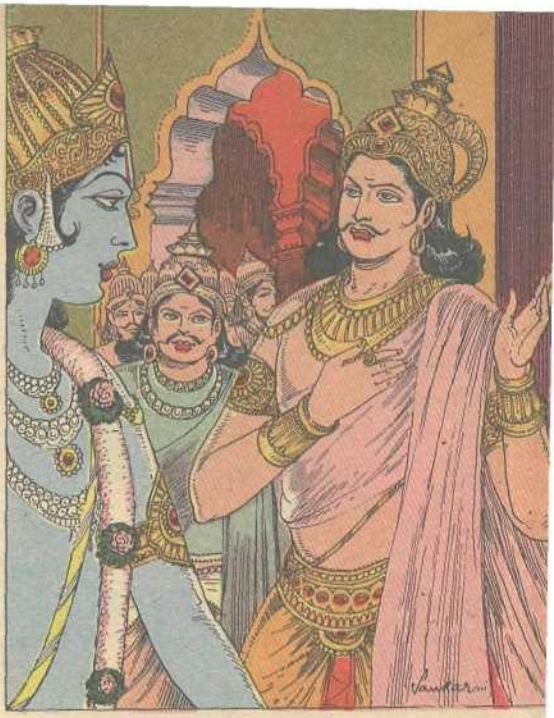

तब कृष्ण ने कहा–"युधिष्ठिर, तुमने धर्म का आश्रय लिया है। कौरवों ने शत्रुता का पक्ष लिया है। क्षत्रिय चाहे विजयी हो या मृत्यु को प्राप्त हो जाय, युद्ध करना ही उसका धर्म है, किंतु भीख माँगना नहीं। कौरव बहुत समय से अनेक राजाओं को मित्र बनाकर बलवान बने हुए हैं, मैं नहीं मानता कि वे शांति के लिए तैयार हैं। उन लोगों ने तुम्हारे साथ जो अत्याचार किये, उनके लिए वे ज़रा भी पश्चात्ताप नहीं करते। इसलिए तुम उनके प्रति सहानुभूति मत दिखाओ। तुम धृतराष्ट्र तथा भीष्म का स्मरण करके उनके प्रति जो भक्तिभाव

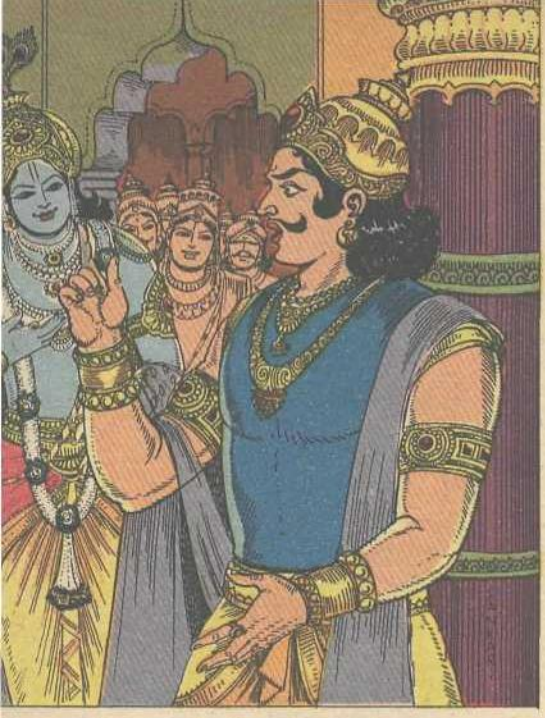

प्रदर्शित करते हो, वह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मैं कौरवों की सभा में जाकर तुम्हारी धर्म-बुद्धि का परिचय दूंगा और सबके मन में तुम्हारे प्रति जो गलत धारणा है, उसे दूर करूँगा। मैं इस बात का प्रयत्न करूँगा कि तुम्हें कोई नुक़सान न हो और शांति स्थापित हो जाय! लेकिन स्थिति को देखते हुए मुझे लगता है कि युद्ध अवश्यंभावी है। दुर्योधन के जीते जी तुमको अपना राज्य प्राप्त न होगा। इसलिए तुम आवश्यक तैयारी करते रहो।"

तब भीम ने कृष्ण से कहा—"कृष्ण, आपका कौरवों की सभा में जाना सर्वथा उचित ही है. सबके समक्ष दुर्योधन को समझा कर शांति का प्रयत्न कीजिये। वह राक्षस स्वभाव का है, उसके साथ स्नेहपूर्ण शब्दों में वार्तालाप करना होगा। इस बात का ख्याल रखिये कि हमारे वंश में कोई भयंकर आपत्ति पैदा न हो, हम युद्ध की कामना नहीं रखते, हम शांति ही चाहते हैं।"

भीम के ये शब्द सुनकर कृष्ण चकित रह गये। भीम ने कभी ऐसे शांतिपूर्ण शब्द नहीं कहे थे, भीम को इस प्रकार बोलते देख कृष्ण को लगा कि उसका जोश ठण्डा पड़ गया है। उन्होंने भीम को उकसाने के ख्याल से यों कहा—"भीम, तुम तो युद्ध का नाम सुनते ही फड़क उठते थे। लेकिन यह कैसी बात है कि तुम तो डरे हुए मालूम होते हो? क्या तुमने धृतराष्ट्र के पुत्रों का वध करने का विचार त्याग दिया है? तुम दिन-रात दुर्योधन का वध करने का सपना देखा करते थे। ऐसे व्यक्ति तुम शांति के लिए ललायित हो रहे हो? यह कैसे आश्चर्य की बात है? सच्ची बात तो यह है कि तुम घबराये हुए हो! अमित भय के कारण तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है! इसीलिए शांति चाहते हो! तुम अपने पराक्रम को भूल बैठे हो! तुम्हारे बात करते देख मुझे लगता है कि कोई और बात कर रहा है! यह कायरता तुम्हारी

लिए शोभा नहीं देती। तुमने बड़े-बड़े कार्य साध लिए हैं। तुम जैसा व्यक्ति उसी चीज़ का भोग करना चाहेगा जिसे वह अपनी दक्षता से प्राप्त करता है।"

ये बातें सुन भीम रोष में भर उठा। उस ने कहा–"कृष्ण, मैंने कुछ कहा तो आपने उसका दूसरा अर्थ लगाया। आपने यह कैसे समझा कि मैं युद्ध नहीं चाहता? इतने दिन मेरे स्वभाव से परिचित होकर भी क्या आपने मेरे बारे में यही धारणा बना ली? मेरे बारे में जानकारी रखनेवाले कोई ऐसे बोल नहीं सकते। मैं अपने मन की बात कहता हूँ, सुनिये। सत्य यह है कि मेरा बल और पौरुष असाधारण हैं। मेरे हाथ में आया हुआ व्यक्ति प्राणों से बच नहीं सकता। युद्ध यदि होगा, तो आप मेरा पराक्रम स्वयं देख लेंगे। मेरा शारीरिक बल घटा नहीं। मैं न भयभीत हूँ। हमारे भारत वंश का निर्मूल मैं नहीं देखना चाहता था, इसलिए मैंने आप से शांति की बातें बतायीं।"

भीम के वचन सुन कृष्ण ने मंदहास करते कहा–"भीम, मैंने तुम्हारी निंदा करने के हेतु ये वाक्य नहीं कहे। मैं तुम्हारी शक्तियों से तुम से भी ज्यादा परिचित हूं। मैं कौरवसभा में जाकर तुम्हारे हित के साथ शांति को साधने का भी यत्न करूँगा।

किंतु मेरा प्रयत्न सफल न हुआ तो युद्ध अनिवार्य है। मैंने तुम्हारे विचारों को जानने के अभिप्राय से यों कहा है।"

इसके बाद अर्जुन ने कृष्ण से कहा–"कृष्ण, कौरवों की सभा में जाकर आपको जो कुछ कहना है, युधिष्ठिर ने सब बताया है। मुझे लगता है कि कौरव शांति के लिए तैयार न होंगे। फिर भी हमें तो प्रयत्न करना ही चाहिये। हमारे बीच मैत्री स्थापित करने का पूरा प्रयत्न कीजिये। मैं समझता हूँ कि यह आपके लिए असंभव नहीं है। हमारे लिए कौन उचित और लाभदायक है, उसका आप ही निर्णय कीजिये।"

"अर्जुन, मुझे जो कुछ प्रयत्न करना है, मैं करूँगा ही। शकुनि और कर्ण के विरोध करते दुर्याधन तुम लोगों को राज्य नहीं देगा। मैं समझता हूँ कि उस दुष्ट से यह नहीं कहना चाहिये कि युधिष्ठिर शांति चाहते हैं। तुम तो दुर्योधन की बात अच्छी तरह जानते हो।" कृष्ण ने समझाया।

इसके उपरांत नकुल ने कृष्ण से कहा– "मेरे भाइयों ने अपने विचार बताये हैं। आपका विचार जैसा हो, वैसे ही करें। हो सकता है कि हमारे विचारों के अनुकूल वे लोग शांति के लिए तैयार न हों। परिस्थिति के अनुरूप सबके विचार बदल जाते हैं। इसलिए वहाँ की स्थिति को देखते हुए आप अपना निर्णय लीजिये। शांति साधना संभव न हो तो कठोरता को अपना लीजिये।"

सहदेव ने कृष्ण से यों कहा–"युधिष्ठिर ने धर्म का पक्ष लिया है; लेकिन आप इस बात की कोशिश करें कि युद्ध अवश्य हो। यदि कौरव शांति चाहेंगे तब भी आप उस प्रयत्न को विफल बना दीजिये।"

सात्यकी ने सहदेव का समर्थन किया। सात्यकी के ये वचन सुनकर पांडव पक्ष के सभी योद्धा सिंहनाद कर उठे।

तब द्रौपदी ने दुख प्रकट करते हुए कृष्ण से कहा–"युधिष्ठिर ने शांति की कामना से पांच गाँव मांगे, फिर भी दुर्योधन ने देने से इनकार किया। आप तब तक न मानिये जब तक पांडवों को कौरव राज्य देने के लिए तैयार न हो जाय। युद्ध में पांडव कौरवों का अवश्य वध कर सकते हैं। यहीं मेरे ख्याल से उचित मार्ग होगा। मेरा अपमान करनेवाला दुर्योधन अभी तक जीवित है। आप संधि का प्रयत्न करते समय मेरे केशों की बात न भूलियेगा। इन्हीं केशों को पकड़कर मुझे भरी सभा में खींच कर ले गये हैं। जब तक मैं दुश्शासन के हाथ को कटा हुआ न देखूँगी, तब तक मेरे मन को शांति न मिलेगी।" यों कहते द्रौपदी विलाप कर उठी।

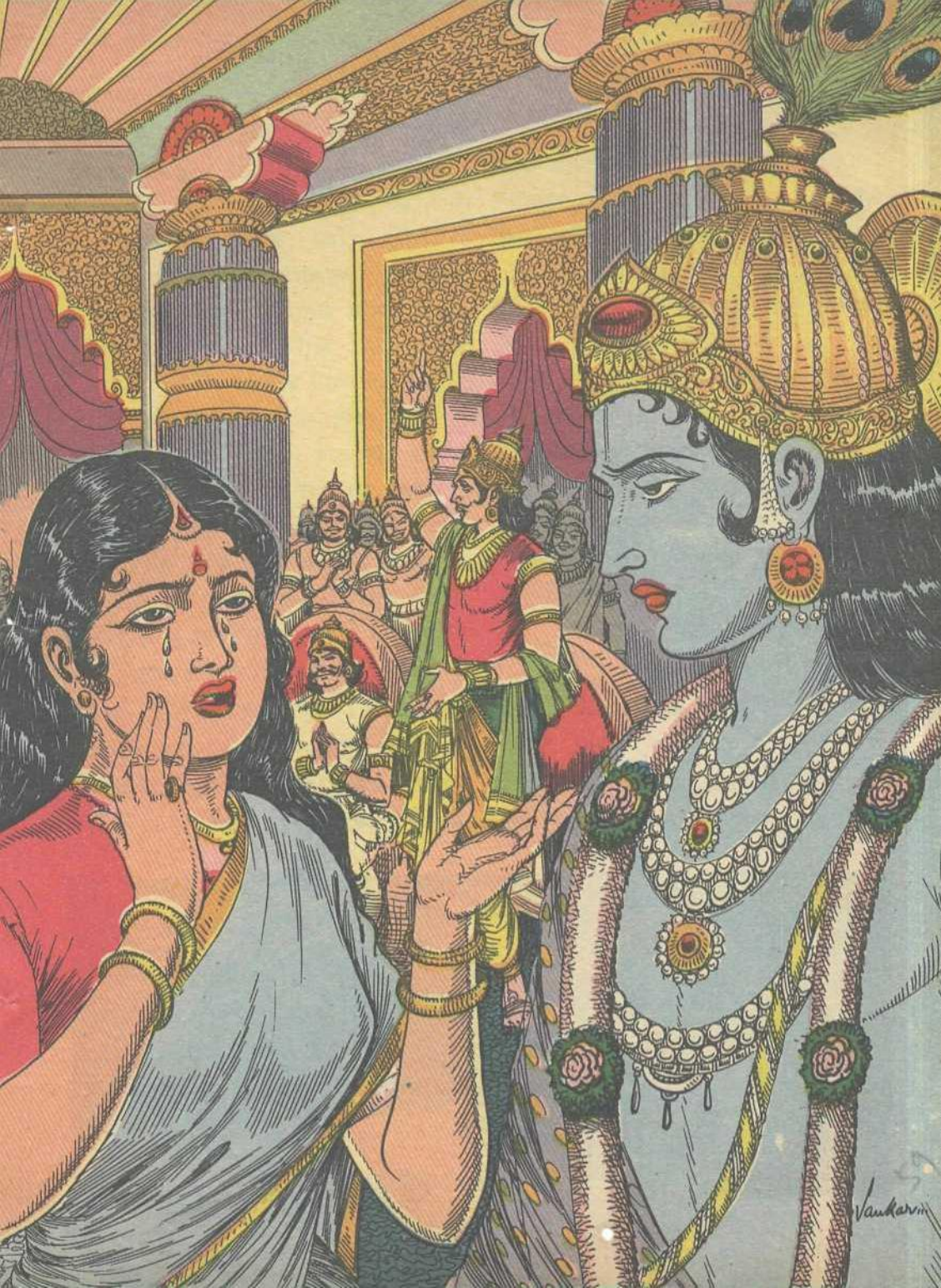
Vaidehi

कृष्ण ने द्रौपदी को उचित रीति से सांत्वना दी।

कृष्ण पांडवों का दूत बनकर जब चलने लगे, तब सात्यकी को निकट बुलाकर कहा–"सात्यकी, तुम मेरे रथ में शंख, चक्र, गदा तथा अन्य आयुध भी रख दो। दुर्योधन दुष्ट स्वभाव का है। उससे भी बड़े दुष्ट कर्ण और शकुनि हैं। चाहे बलवान भी क्यों न हो, शत्रु को निर्बल मानकर उसकी अपेक्षा नहीं करनी है।"

सारी तैयारी के पश्चात कृष्ण सात्यकी को रथ पर बिठाकर हस्तिनापुर के लिए चल पड़े। उस वक़्त पांडव, चेकितान, धृष्टकेतु, द्रुपद, काशी का राजा, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट इत्यादि राजाओं ने कृष्ण का थोड़ी दूर तक साथ दिया।

उनके वापस लौटते समय युधिष्ठिर ने कृष्ण का आलिंगन करके कहा–"कृष्ण, मेरी माताजी का कुशल पूछिये, उन्होंने बड़े प्रेम के साथ हमारा पालन-पोषण किया है। सारी विपत्तियों से हमारी रक्षा की है। हमारे कारण उन्होंने असनीय यातनाएँ झेली हैं, हमारी ओर से आप उनका आलिंगन कीजिये। हमारे वास्ते वे दुखी हैं, उन्हें सांत्वना दीजिये। धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण, कृप, ब्लाहिक, सोमदत्त, अश्वत्थामा इत्यादि बुजुर्गों को हमारे प्रणाम बताइये। उनके कुशल-क्षेम का परामर्श कीजिये। विदुर का मेरी ओर से आलिंगन कीजिये।"

इसके बाद सब कृष्ण से विदा लेकर वापस लौट आये।

कृष्ण का रथ दारूक हांक रहा था। वह तेजी के साथ आगे बढ़ा। कृष्ण ने कौरवों के राज्य में प्रवेश करके वृकस्थल में पड़ाव डाला। उस रात को वहीं पर बिताने का निश्चय कर लिया। वहाँ पर कृष्ण को ठहरे देख उस गाँव के बुजुर्ग उन्हें देखने आये। अपने अपने घर ले जाकर कृष्ण का सत्कार किया। कृष्ण ने अपने पड़ाव में सब को आतिथ्य दिया और उचित रूप में उनका सत्कार किया।

शिव-लीलाएँ

[२]

भोमावती नामक गाँव में सोमयाजी नामक एक शिवभक्त था। सिद्धराम उसका पुत्र था। सिद्धराम की सात साल की उम्र में उसके पिता सोमयाजी का देहांत हो गया। वह माँ के लाड़-प्यार में बढ़ता गया।

दीपावली पर्व के कुछ दिन पहले सिद्धराम अपने साथियों के साथ समिधाएँ, पत्ते आदि लाने वन में गया। वहाँ पर सब बालक एक बरगद के नीचे बैठ कर बातचीत करने लगे।

"अगली दीपावली के दिन हम अपनी दीदी और बहनोई को बुला लायेंगे। पर्व के दिन अपने घर में जलेबी, लड्डू, बर्फ़ी, मीठी पूड़ियाँ, रसगुल्ले वगैरह बनवा लेंगे। अपनी दीदी और बहनोई को नये कपड़े देंगे।" इस तरह बालक आपस में कहा-सुनी कर रहे थे। ये बातें सुनकर सिद्धराम बोला–"मैं भी त्यौहार के दिन अपनी दीदी और बहनोई को बुला लाऊँगा। खीर बनवा लेंगे। बहनोई को महीन कपड़े देंगे।"

सिद्धराम की बातें सुन बाक़ी लड़के उसका मजाक उड़ाते कई सवाल पूछ बैठे–"अरे, तुम्हारे तो कोई बहन नहीं, बहनोई कहाँ से आयेगा? हमारे पास डींग मारते हो? बताओ तो तुम्हारी बहन कौन है? उसका क्या नाम है? तुम्हारे बहनाई का नाम क्या है? वह कहाँ रहते हैं? उनके कितने बच्चे हैं?"

उनके सवालों का सिद्धराम जवाब नहीं दे पाया। वह रोते घर लौट आया।

बेटे को रोते देख माँ ने उसे निकट बुलाया। उसके आँसू पोंछते पूछा–"बेटा,

अंतिम पृष्ठ का चित्र

क्या नीचे गिर गये हो! क्या कोई चोट आयी है? किसी ने तो पीटा है न? क्या हुआ? साफ़ साफ़ बताते क्यों नहीं?"

सिद्धराम ने अपनी माँ से साथियों के मजाक़ उड़ाने की बातें सुनायीं।

सब बातें सुनकर माँ बोली–"बेटा, उनकी बातों पर छिड़ते क्यों हो? तुम्हारी बहन का नाम भ्रमरांबा है, तुम्हारे बहनोई का नाम मल्लिकार्जुन है। वे दोनों श्रीशैल पर्वत पर रहते हैं। उन्हें ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं। गणपति और कुमारस्वामी उनके पुत्र हैं। सारे लोग उनके आदेश पर चलते हैं। तुम्हारे बहनोई जैसे व्यक्ति संसार में किसी के बहनोई नहीं हैं।"

माँ के मुंह से यह वृत्तांत सुनकर सिद्धराम उछल पड़ा, बोला–"माँ, तब तो मैं दीपावली के लिए उन्हें बुला लाऊँगा। सब के घर बहन और बहनोई पर्व के दिन आते हैं। हम कभी बहन और बहनोई को घर नहीं लाये।"

"बेटा, तुम्हारे पिता के मरने के बाद उन्हें बुला लानेवाले भी कौन हैं? तुम तो अभी बच्चे हो। रास्ता जंगलों से भरा है, उसमें शेर, बाघ, भालू, सांप आदि होते हैं। अलावा इसके तुम्हारे बहनोई बड़े ही ऐश्वर्यवान हैं। वे हमारे गरीब घर में क्यों आयेंगे? वे आयेंगे तो भी अकेले नहीं आयेंगे, बड़े परिवार के साथ आयेंगे। हमें खाने को नहीं, उन सब को हम कैसे खिला-पिला सकते हैं? तुम बड़े होकर जब कमाने लग जाओगे तब अपनी बहन और बहनोई को बुला ला सकते हो!' माँ ने बेटे को समझाया।

सिद्धराम उस वक़्त चुप रह गया। दूसरे दिन सूर्योदय से पहले ही उठकर अपनी माँ से बताये बिना घर से चल पड़ा। रास्ते में सब से श्रीशैल पर्वत का मार्ग पूछते, खूंख्वार जानवरों की परवाह किये बिना जंगलों से होकर आखिर श्रीशैल पहुँचा। वहाँ पर कई तीर्थ और मंदिर हैं। सिद्धराम अपनी बहन और बहनोई के वास्ते

बड़ी खोज़ करने लगा। उसने किसी से पूछा–"मल्लिकार्जुन कहाँ रहते हैं?" उसने सिद्धराम को मंदिर दिखाया। उस में जाकर सिद्धराम ने देखा, वहाँ पर लिंग के सिवाय कुछ नहीं है।

सिद्धराम तब तक थक गया था। वह लिंग के सामने बैठ कर बोला–"बहनोईजी, तुमको और दीदी को दीपावली के लिए घर बुलाने के लिए किसीसे कहे बिना बड़ी तक़लीफ़ उठा कर चला आया हूँ। हमारे गाँव के सभी बच्चों की बहनें और बहनोई पर्व के दिन आ रहे हैं। मेरी माँ आप दोनों को देखने की हज़ार आँखो से प्रतीक्षा कर रही है। क्या यह सोच कर तुम रूठे दिखाई नहीं देते हो कि आज तक हमने तुम्हें बुलाया नहीं? तुम चाहे बड़े धनी ही क्यों न हो, रिस्ता थोड़े ही छूट जाता है। हमें गरीब मान हमारे घर आये बिना रूठ मत जाओ। मैं तुम दोनों को लिए बिना घर नहीं लौटूंगा।"

सिद्धराम की बिनती व्यर्थ गयी। उसने अपनी बहन से भी इसी प्रकार बिनती की, पर कोई फ़ायदा न रहा।

असयनीय वेदना और निराशा से ऊबकर गिद्धराम ने आत्म-हत्या करनी चाही। बहन और बहनोई को घर बुला लाने की डींग मार कर अब उन्हे न बुला ले जाने से

उसका कैसा अपमान होगा? इस अपमान का अनुभव करने की अपेक्षा मर जाना बेहतर है। यह भी अपनी बहन और बहनोई के सामने मर जाने से यह कलंक उन पर ही लगेगा।

यह सोचकर सिद्धराम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और वहाँ से नीचे कूदने को हुआ।

इतने में किसी ने उसके कंधे पकड़ लिये। उसके एक ओर एक पुरुष और दूसरी ओर एक नारी खड़ी थी।

"तुम लोग कौन हो? मरनेवाले मुझे क्यों रोक रहे हो? मेरी बहन और बहनोई को मुझ पर सहानुभूति नहीं है

तो तुम्हें क्यों है?" सिद्धराम ने उनसे पूछा।

"भैया, हम पराये नहीं हैं। मैं तुम्हारी दीदी भ्रमरांबा हूँ, ये तुम्हारे बहनोई हैं। तुम ने हमें कभी नहीं देखा है। इसलिए पहचान नहीं पा रहे हो? किसी ने हमें बताया कि सोमयाजी का पुत्र यहाँ पर घूम रहा है। इसीलिए हम तुम्हारी खोज करते यहाँ पर आये।" उस नारी ने कहा।

सिद्धराम ने परम आनंदित हो दीदी और बहनोई को प्रणाम किया। उन्होंने सिद्धराम को अपने पुत्र तथा परिवार को दिखाया। सिद्धराम ने उन्हें अपने साथ चलने का निमन्त्रण दिया। इस पर वे मान गये।

उधर सिद्धराम को न पाकर उसकी माँ बड़ी व्याकुल हुई। यह सोचकर वह बहुत डर गयी कि वह बालक अपनी बातों पर यक़ीन करके श्रीशैल चला गया होगा।

कुछ दिन बीत गये। पर्व का दिन आया। उसी दिन सिद्धराम ने घर लौट कर अपनी माँ से बताया कि वह अपनी दीदी, बहनोई और उनके परिवार को साथ लाया है और वे सब गाँव के मंदिर के पास हैं। सिद्धराम की माँ आनंद और आश्चर्य के साथ मंदिर के पास दौड़ गयी। पार्वती, परमेश्वर, गणपति, कुमारस्वामी तथा उनके परिवार को देख अपने घर पधारने का उन्हें निमंत्रण दिया।

सब के लौटने पर उनके पुराने मकान की जगह एक दिव्य महल खड़ा था। सब अतिथियों ने उसमें प्रवेश किया। उस गाँव के लोग उस नये दिव्य भवन को देख आश्चर्य चकित हो गये। महल के बाहर के द्वार बंद थे। मगर ऐसा लग रहा था कि भीतर लोगों की अपार भीड़ का कोलाहल है।

दीपावली के दिन सिद्धराम के अतिथि बनकर आये हुए लोग और कोई न थे, साक्षात् पार्वती और परमेश्वर थे। वे सिद्धराम और उनकी माँ को कैलास में ले गये।

१३४. "ड्रागन" वृक्ष

केसरीस टापुओं में टेनरीस नामक एक छोटा टापू है, उस टापू में स्थित इस विचित्र वृक्ष की चारों तरफ़ की माप ५० फुट है। इसे "ड्रागन" वृक्ष कहते हैं। ये वृक्ष दीर्घकाल तक जीवित रहते हैं। कहा जाता है कि इस चित्र में अंकित वृक्ष की आयु ३,००० साल की है। इस वृक्ष से निकलनेवाले द्रवपदार्थ के द्वारा प्रतिष्ठित व्यक्तियों की लाशों के नष्ट न होने से सुरक्षित रखते हैं।

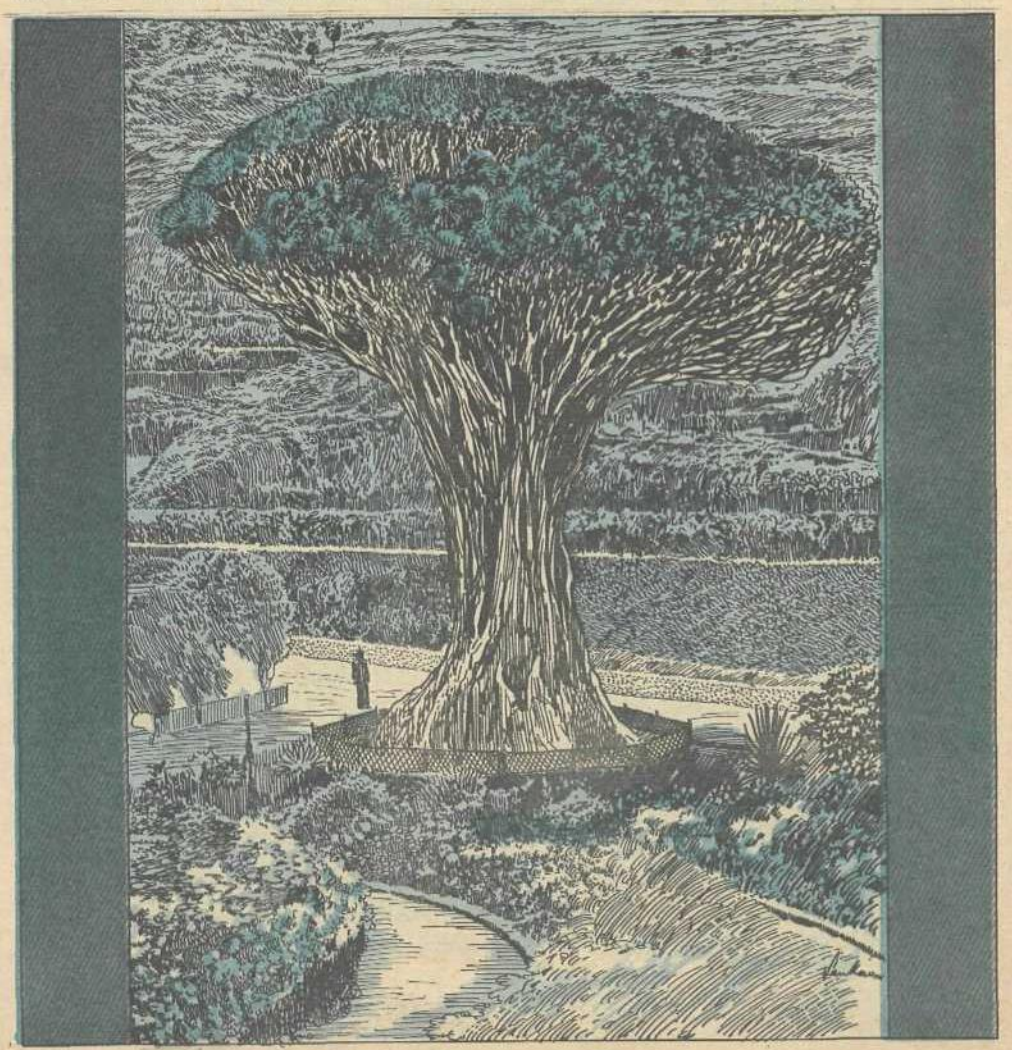

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

सब्जीवाली चली बजार।

प्रेषक :
प्रेमनाथ सहाय

Photo by Anant Desai

झिकपानी पी.
जि. सिंगभूम (बिहार)

हम नन्हें से मच्छी मार!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

*

★ परिचयोक्तियाँ मार्च ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मई के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

ईमानदारी का फल	...	२	चोर-विद्या	...	२७
धनी और दरिद्र	...	५	उड़न खटोला	...	२९
यक्ष पर्वत	...	९	जीत किसकी	...	३८
पितृधर्म	...	१७	पुनर्जन्म	...	४२
जनेऊ का बोझ	...	२३	चंचल-चित्त	...	४५
हाज़िर-जवाब	...	२५	महाभारत	...	४९

गणतंत्र-दिवस-दीपमालिका

दूसरा मुखपृष्ठ:
मद्रास सेंट्रल स्टेशन

तीसरा मुखपृष्ठ:
मद्रास रिप्पन बिल्डिंग

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form IV), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. *Place of Publication*	:	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
2. *Periodicity of Publication*	:	MONTHLY 1st of each calendar month
3. *Printer's Name*	:	B. V. REDDI
Nationality	:	INDIAN
Address	:	Prasad Process Pvt. Ltd., 2&3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
4. *Publisher's Name*	:	B. VISWANATHA REDDI
Nationality	:	INDIAN
Address	:	Chandamama Publications 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
5. *Editor's Name*	:	CHAKRAPANI (A. V. Subba Rao)
Nationality	:	INDIAN
Address	:	'Chandamama Buildings' 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
6. *Name & Address of individuals who own the paper*	:	Chandamama Publications PARTNERS: 1. Sri B. Nagi Reddi, 2. Smt. B. Padmavathi, 3. Smt. B. Bharathi, 4. Sri B. V. Sanjaya Reddi (Minor), 5. Sri B. N. Suresh Reddi (Minor), 6. Sri B. V. Satish Reddi (Minor).

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

1st March 1973

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

बदन में दर्द?
मिनटों में आराम...

बदन का दर्द, सर्दी-जुकाम, सरदर्द और मोच के दर्द से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये अमृतांजन मालिश कीजिये। पिछले ७५ वर्षों से भी अधिक समय से यह एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा है। अमृतांजन की एक शीशी हमेशा पास रखिये। यह किफायती 'जार' और कम कीमत वाले डिब्बे में भी मिलता है।

AM 5961A

अमृतांजन
के ज़रिये!

अमृतांजन—सर्दी-जुकाम और दर्द के लिए
१० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण!

अमृतांजन लिमिटेड

रेखागणित को आसान व भूगोल को रंगीन बनाइये...

पिथागोरस को मात दीजिये। रेखाचित्रो को रंगीन बनाइये...कैम्लिन इन्स्ट्रुमेंट बाक्स व रंगीन पेंसिल लीजिये। जब कि एक काम में अचूक व दिखने में आकर्षक है तो दूसरी मुलायम लेड वाली और चलने में सरल है। पर दोनों टिकाऊ, कम घिसने वाली और किफ़ायती हैं।

कैम्लिन आपके लिए वैक्स क्रेयान, वाटर कलर, पोस्टर कलर आदि विविध प्रकार की आर्ट सामग्रियां बनाते हैं। आपके नजदीक के विक्रेता के यहां मिलते हैं।

कैम्लिन

कलर पेंसिल्स व
इन्स्ट्रुमेंट बाक्स ख़रीदिये

कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड,
आर्ट मेटीरियल डिविजन, जे. बी. नगर,
बम्बई-५९ (भारत)

PRATIBHA 1813-39 HIN

Photo by: **PUSHPA**

CHANDAMAMA (Hindi) MAR. 1973 92 Paise Including Excise Duty Regd. No. M. 5452

शिव-लीलाएं